

RNI क्र. 50309/85/पृष्ठ संख्या 44/प्रकाशन तिथि 1 मई 2025

अंक 464 ● मई 2025

# चंकमंक

## बाल विज्ञान पत्रिका

एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों  
एक मेले में पहुँचा हुमकता हुआ

मूल्य ₹50

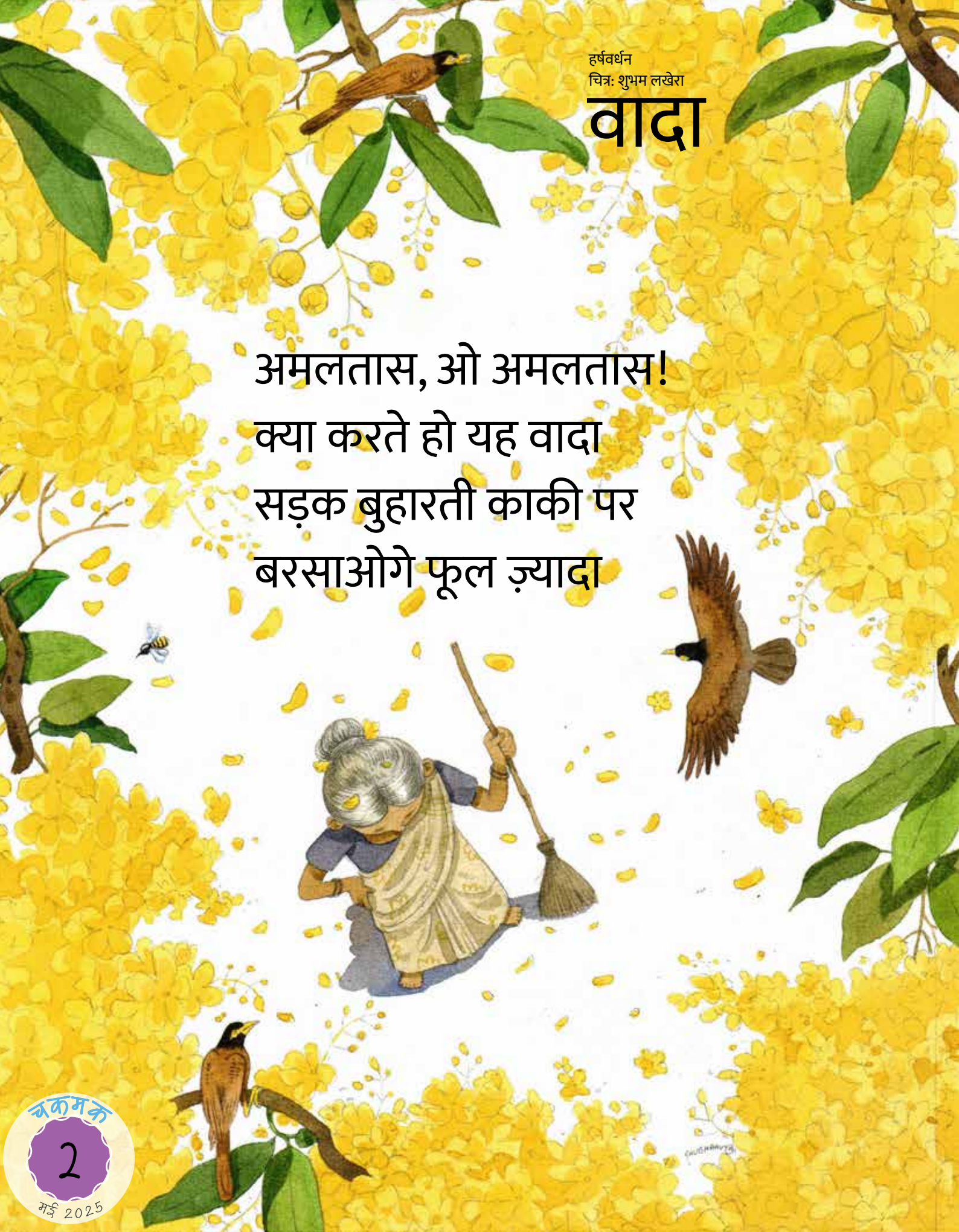
1

हर्षवर्धन

चित्र: शुभम लखेरा

# वादा

अमलतास, ओ अमलतास!  
क्या करते हो यह वादा  
सड़क बुहारती काकी पर  
बरसाओगे फूल ज़्यादा



# चकमक

वादा - हर्षवर्धन	2
आसमान में साँप - जितेश शेल्ले	4
तुम भी बनाओ - होलोग्राम - प्रभाकर डबराल	6
अपराधों के बारे में कीड़े... - विनीशिअस डा काँस्टा-सिल्वा, कैरीना मारा डि सूजा व साथी	8
चित्रपहेली	12
आइसक्रीम - मयूख घोष	14
भूलभुलैया	20
नए पते - बिल्ली के बच्चे - शाहिमा	21
मेहमान जो कभी गए ही नहीं - भाग 11 - आर एस रेशू राज, ए पी माधवन व साथी	24
मेरे जीवन का सबसे कठिन... - तन्वी श्रीकृष्ण काले	26
क्यों-क्यों	28
भूत - शशि सबलोक	32
माथापच्ची	34
मेरा पत्रा	36
तुम भी जानो	43
एक छोटा-सा लड़का था मैं... - इब्रे इंशा	44

आवरण चित्र: हबीब अली

**सम्पादक**

विनता विश्वनाथन

**सह सम्पादक**

कविता तिवारी

**विज्ञान सलाहकार**

सुशील जोशी

उमा सुधीर

**डिजाइन**

कनक शशि

**सलाहकार**

सी एन सुब्रह्मण्यम्

शशि सबलोक

**वितरण**

इनक राम साहू

एक प्रति : ₹ 50

**सदस्यता शुल्क**

(रजिस्टर्ड डाक सहित)

वार्षिक : ₹ 800

दो साल : ₹ 1450

तीन साल : ₹ 2250

चन्दा (एकलव्य के नाम से बने) मनीऑर्डर/चेक से भेज सकते हैं।

एकलव्य भोपाल के खाते में ऑनलाइन जमा करने के लिए विवरण:

बैंक का नाम व पता - स्टेट बैंक ऑफ इंडिया, महावीर नगर, भोपाल

खाता नम्बर - 10107770248

IFSC कोड - SBIN0003867

कृपया खाते में राशि डालने के बाद इसकी पूरी जानकारी

accounts.pitara@eklavya.in पर ज़रूर दें।

फोन: +91 755 2977770 से 2 तक; ईमेल: chakmak@eklavya.in,

वेबसाइट: <https://www eklavya.in/magazine-activity/chakmak-magazine>

# आसमान में साँप

लेख व फोटो: जितेश शेल्ले

दृश्य रोमांच से भरा और रोंगटे खड़े कर देने वाला था। वह अपने पंजों में लगभग ढाई से तीन फुट लम्बा साँप दबोचे हुए था। और अपने दोनों पंजों से उस साँप के फुर्तीले शरीर पर काबू पाने की ज़िद में लगा हुआ था। वह अपनी पैनी चोंच से उसके सर पर वार कर रहा था। जंग एक तरफा लग रही थी। आधी जंग शायद उस वक्त लड़ी गई होगी जब ज़मीन से वह शिकारी उसे उठाकर टहनी पर ले आया।

साँप अब अधमरी अवस्था में था। उसकी जद्दोजहद फिर भी जारी थी। वह किसी तरह आज़ाद होना चाह रहा था। लेकिन शिकारी की पकड़ काफी मज़बूत थी। साँप उसके पैरों पर हमला करने की कोशिश कर रहा था। पर उसके पैर तो मानो हमले को झेलने के लिए ही बने हुए थे। वे थोड़े मोटे और खुरदुरे नज़र आ रहे थे। साँप ज़हरीला था या नहीं यह तो मैं नहीं जानता। लेकिन इतना तो है कि साँप अगर ज़हरीला होता और हमला सटीक बैठता तो शायद शिकारी का ही शिकार हो जाता।

कुछ समय बाद उस शिकारी की पैनी नज़र जैसे ही हम पर पड़ी वह उस साँप को उठाकर उड़ने लगा। वह हमारे डर से नहीं बल्कि हमसे चिढ़कर उड़ रहा था। शायद इस वजह से कि हम उसे उसके शिकार का आनन्द उठाने नहीं दे रहे थे। उसके नुकीले नाखून उस साँप के शरीर में घाव कर रहे थे। अब वह साँप झूले की तरह आसमान में झूल रहा था, ऐसा झूला शायद ही कोई झूलना चाहे।

अब तुम्हारे कौतूहल भरे दिमाग में यह सवाल उछालें खा रहा होगा कि ऐसा कौन-सा शिकारी है जो साँप पर हमला करने की जुरत करता है। तो तुम्हें बता दूँ कि यह एक पंछी है, जिसका नाम है 'क्रेस्टेड सेर्पेंट ईगल'। जैसा नाम वैसा ही काम। पेंच टाइगर रिजर्व में देखा गया यह दृश्य मुझे हमेशा याद रहेगा। तुम भी कभी जाओ तो शायद तुम्हें भी रोमांच से भरे ऐसे कुछ दृश्य नज़र आ जाएँ।

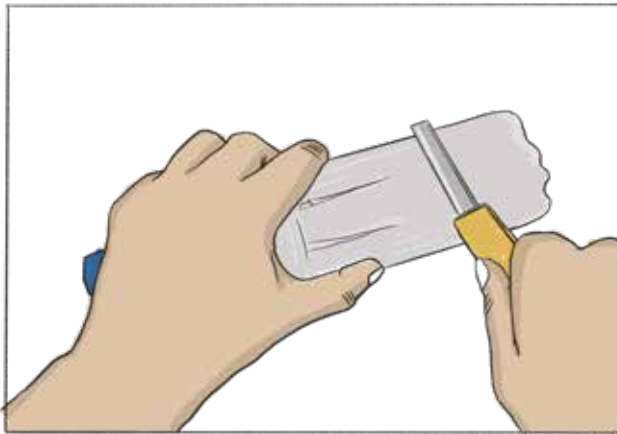


वैसे जाते-जाते तुमसे पूछना चाहूँगा कि क्या तुम ऐसे जानवरों की सूची बना सकते हो, जो साँपों का शिकार कर उन्हें अपना भोजन बनाते हैं?

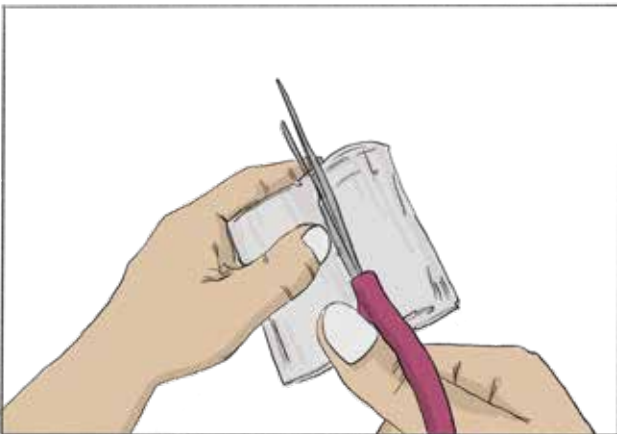


# कुम्भीओ बनओ

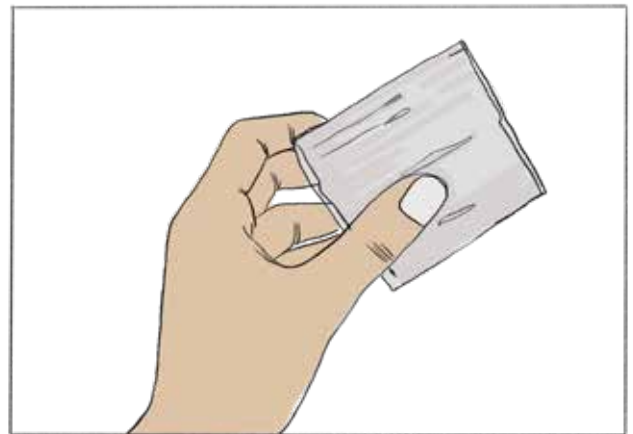
जुगाड़: कड़क प्लास्टिक  
वाली कोई चीज़ जैसे  
बोतल या गिलास, कैंची,  
कटर या चाकू, स्मार्टफोन



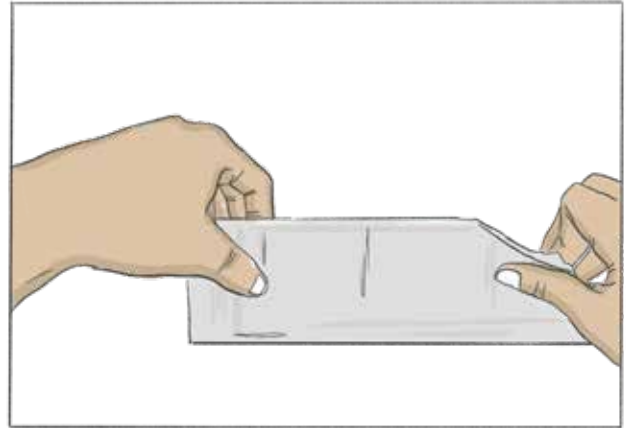
बोतल की गर्दन व पीछे के हिस्से को काट लो।



इसकी एक परत को लम्बाई में काट लो।



बचे हुए हिस्से को हाथ से दबाकर चपटा कर लो।

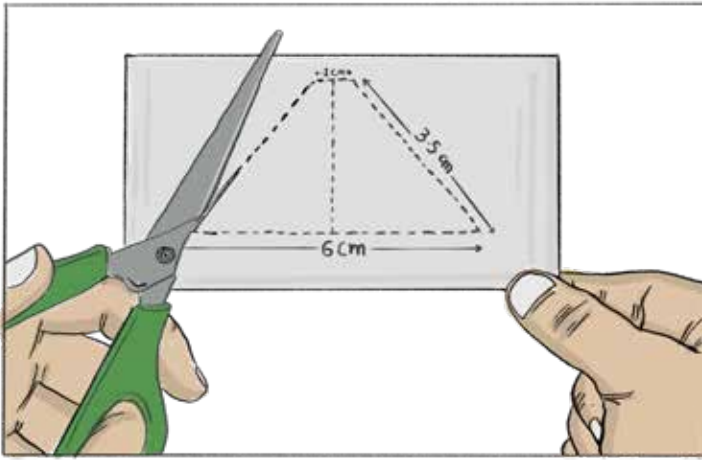


इस प्लास्टिक शीट को चार बराबर भागों में मोड़ लो।

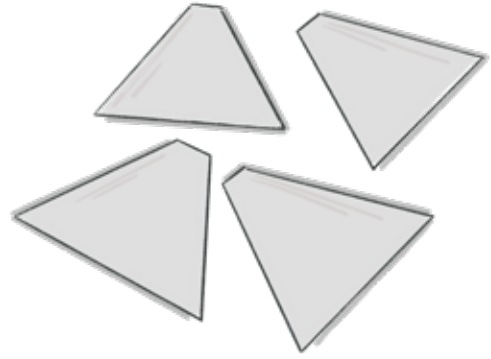
## होलोग्राम



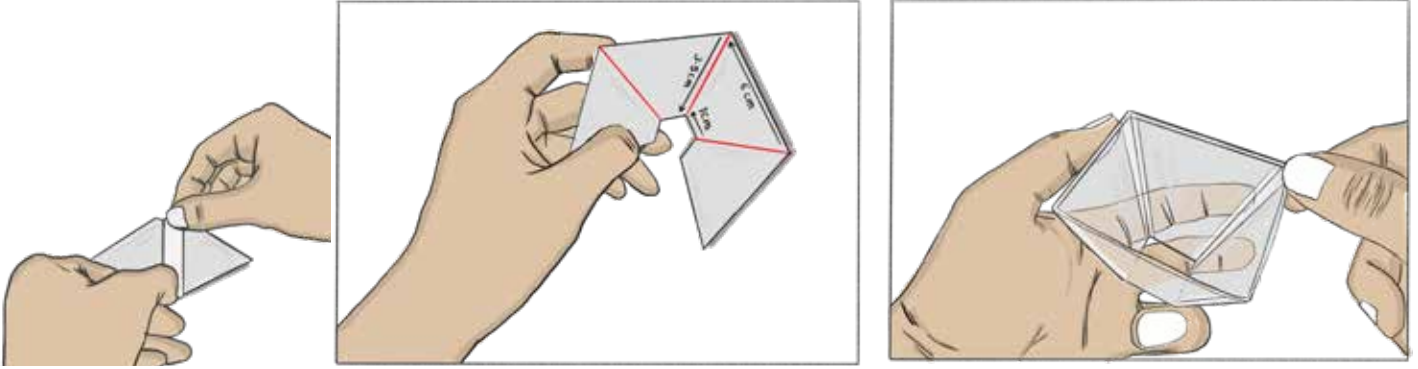
प्रभाकर डबराल



अब इस पर एक समलम्ब चतुर्भुज (trapezium) बनाओ जिसकी एक भुजा 6 सेमी, दो भुजाएँ 3.5 सेमी और एक भुजा 1 सेमी की हो। इस चतुर्भुज को काट लो।

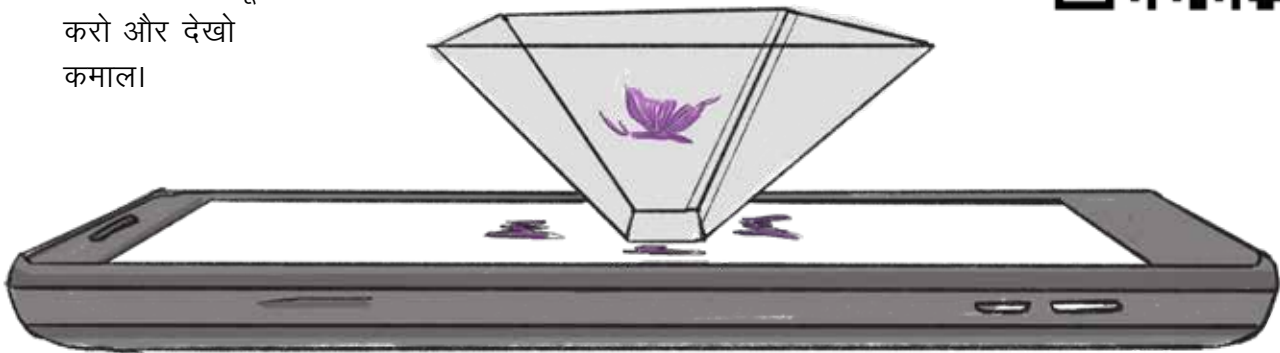


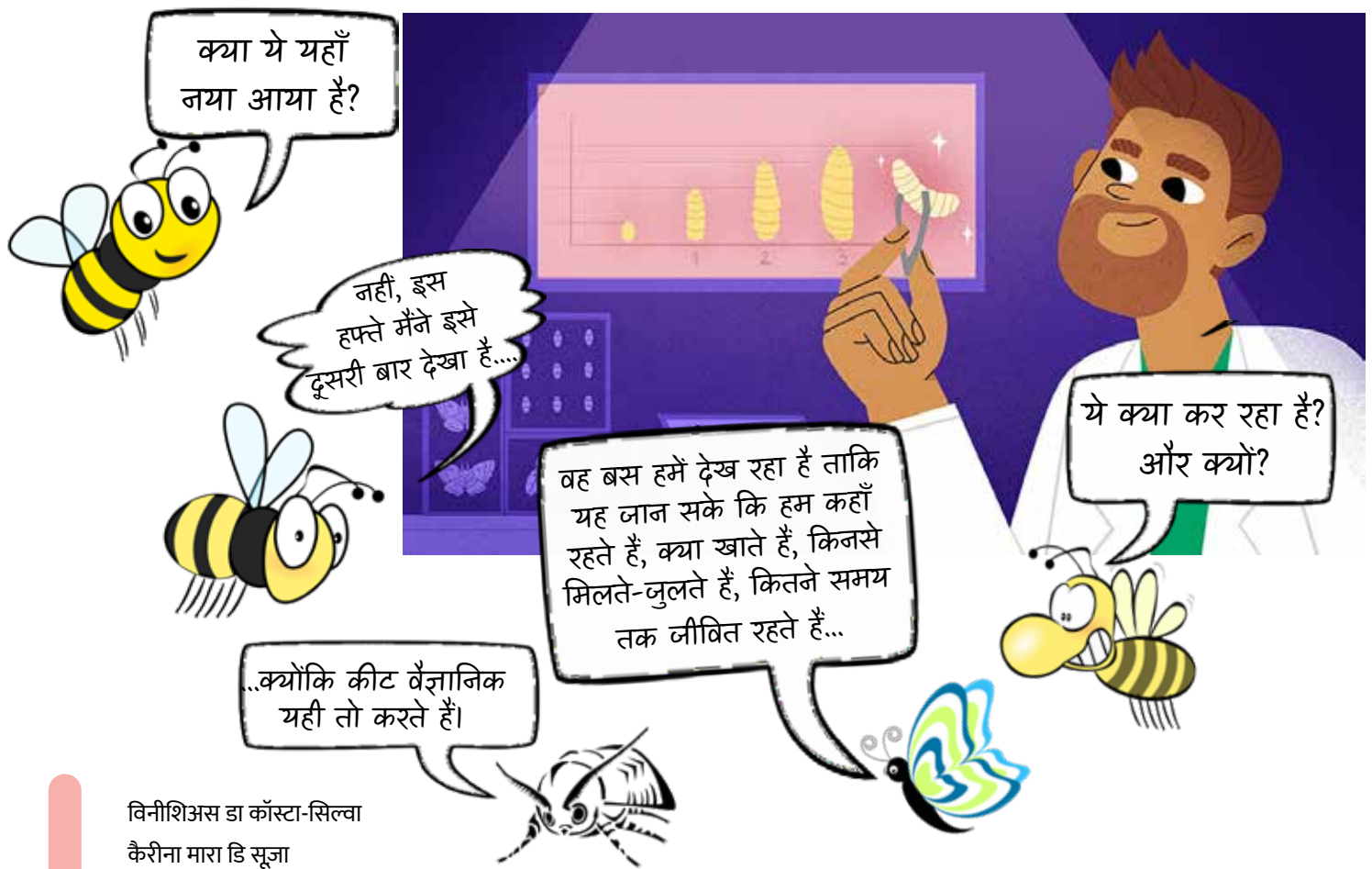
तुम्हें चार ऐसे टुकड़े मिलेंगे।



इन चारों टुकड़ों को सेलो टेप से जोड़कर पिरामिडनुमा आकृति बना लो।

अब अपने स्मार्टफोन से दिए गए QR कोड को स्कैन करो। फिर प्लास्टिक पिरामिड को स्मार्टफोन के केन्द्र में रखकर वीडियो को चालू करो और देखो कमाल।





विनीशियस डा कॉस्टा-सिल्वा  
कैरीना मारा डि सूज़ा  
लुइज़ ऐन्टोनियो लीरा  
कैथरीन सोल  
पैट्रीशिया जैकलीन थिसैन

## अपराधों के बारे में कीड़े हमें क्या बता सकते हैं?

### कीट: सुन्दर और महत्वपूर्ण

परागणकर्ता, अपघटक और अन्य कीटों को नियंत्रित करने जैसी जानी-पहचानी भूमिकाओं से परे कीट अपराधों को सुलझाने में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकते हैं। इस लेख में, हम कुछ दिलचस्प उदाहरणों के ज़रिए यह देखेंगे कि कैसे कीट विज्ञानी कीटों का उपयोग करके आपराधिक मामलों को सुलझाने में कानून व्यवस्था और न्याय प्रणाली की मदद कर सकते हैं।

सैर के दौरान या शहर के किसी व्यस्त पार्क में तुमने मधुमक्खियों, मक्खियों, तितलियों या भृंगों को उनके प्राकृतिक परिवेश में देखा होगा—फूलों के पास मँडराते हुए, घास के बीच टहलते हुए, या फलों के पेड़ पर चढ़ते हुए। कीट पृथ्वी पर सबसे अधिक संख्या में पाए जाने वाले जीव हैं। ये ऐसे स्थलीय जीव हैं, जो वातावरण में बहुत अच्छी तरह ढल गए हैं। महासागरों को छोड़कर यह पृथ्वी के लगभग हर कोने में पनपते हैं। हालाँकि कुछ कीट, जैसे कि मधुमक्खियाँ, चींटियाँ या मच्छर इन्सानों के दुश्मन माने जा सकते हैं। इसकी वजह अपने बचाव में काटने या डंक मारने की उनकी प्रवृत्ति और कुछ मामलों में रोग फैलाने में उनकी भूमिका हो सकती है। लेकिन यह समझना ज़रूरी है कि वे स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र को बनाए रखने में अहम भूमिका निभाते हैं।

जीव विज्ञान के अन्तर्गत कीटों का अध्ययन करने वाले विशेष क्षेत्र को कीट विज्ञान और इस विषय का अध्ययन करने वाले पेशेवरों को कीट विज्ञानी कहा जाता है। कीट विज्ञानियों के पास कीटों के बारे में व्यापक ज्ञान होता है: वे कहाँ रहते हैं, कितने समय तक जीवित रहते हैं, क्या खाते हैं और अण्डे से वयस्क होने में उन्हें कितना समय लगता है या उनका व्यवहार मनुष्यों को कैसे प्रभावित कर सकता है।

### अपराध स्थल के सुराग के तौर पर कीट

कुछ कीट अपराधों को सुलझाने में जासूसों और न्याय प्रणाली की मदद कर सकते हैं। कीट विज्ञानियों की बदौलत ऐसे सवालों के जवाब दिए जा सकते हैं कि “यह हत्या कितने समय पहले हुई थी?” या “मेरे घर में दीमक कितने समय से रह रहे हैं?” अपराधों को सुलझाने में मदद करने के लिए कीटों के अध्ययन को फोरेंसिक एंटोमोलॉजी कहते हैं। ‘फोरेंसिक’ का अर्थ है कानूनी मामलों की जाँच और समाधान के लिए वैज्ञानिक तरीकों का उपयोग करना।

वास्तविक जीवन के ऐसे कई उदाहरण हैं जहाँ कीट कानूनी मसलों को हल करने में बतौर सुराग काम आए हैं। जैसे कि यह समझने में कि किसी खाद्य पदार्थ के दूषित होने के लिए कौन ज़िम्मेदार है, घर में कीटों का हमला कब और कैसे हुआ या किसी प्रतिबन्धित पदार्थ या ज़हर को खाने से किसी व्यक्ति की मौत कैसे हुई।

### घरों से जुड़े अपराध

मान लो कि तुम और तुम्हारा परिवार एक नए घर में शिफ्ट हुए हैं। तुम दीवार पर एक तस्वीर टाँगने की तैयारी कर रहे हो। लेकिन पहली ही कील ठोकने पर तुम्हें दीवार के अन्दर दीमक दिखाई देती है, जो घर की संरचना को नुकसान पहुँचाती है। इस कारण तुम्हारा परिवार घर बेचने वाली कम्पनी या व्यक्ति के खिलाफ मुकदमा दायर करता है, यह दावा करते हुए कि घर में पहले से ही दीमक थे। अब सवाल यह उठता है कि “ये दीमक वहाँ कब से रह रहे हैं?” दीमकों का अध्ययन करके कीट विज्ञानी उनकी कॉलोनी की उम्र का अनुमान लगा सकते हैं। यह एक अहम सबूत हो सकता है ये तय करने के लिए कि दीमक तुम्हारे घर खरीदने के पहले से वहाँ थे या बाद में आए। यह शहरी फोरेंसिक कीट विज्ञान मामले का एक उदाहरण है, जिसमें इन अपराधों को सुलझाने के लिए भृंग, चींटियों और दीमकों जैसे कीटों का उपयोग किया जाता है (चित्र 1 में बी, सी, ई)।

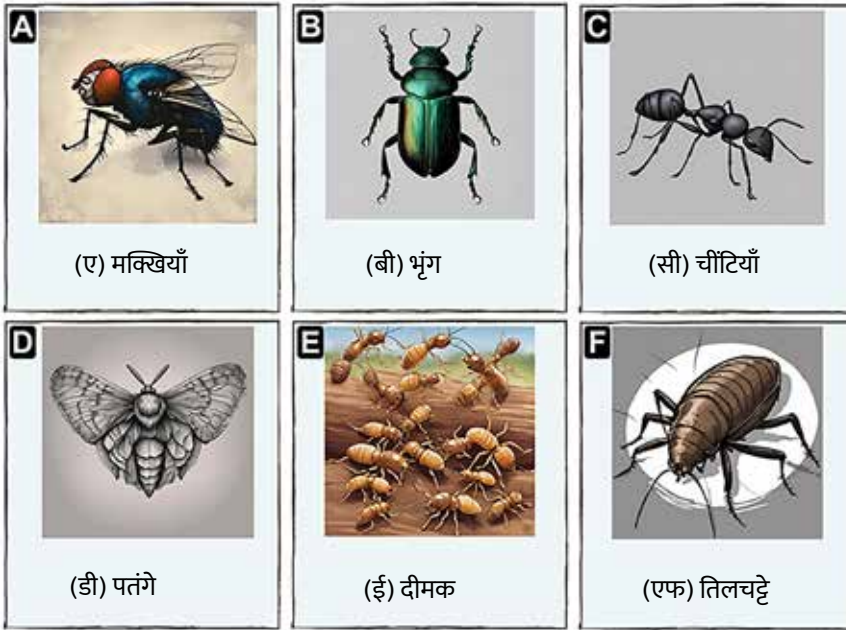
### खाद्य पदार्थों का दूषित होना

मान लो कि तुम एक स्वादिष्ट चॉकलेट खाने जा रहे हो। जैसे ही तुम पैकेट खोलते हो तुम्हें उसमें कीटों के लार्वा दिखाई देते हैं। अब सवाल उठता है कि ये लार्वा वहाँ कब से हैं? चॉकलेट कहाँ दूषित हुई? क्या कीड़े तुम्हारे घर में चॉकलेट में घुस गए, क्या चॉकलेट बाज़ार में दूषित हुई, या यह चॉकलेट बनाने वाले की लापरवाही का नतीजा था?

चॉकलेट कब खरीदी गई और लार्वा कब दिखे इस जानकारी के साथ-साथ कीट के आकृति विज्ञान, लम्बाई, वज़न और पसन्दीदा प्राकृतवास (habitat) का अध्ययन करके कीट विज्ञानी इन सवालों का जवाब दे सकते हैं। यह संग्रहित खाद्य पदार्थों के लिए फोरेंसिक टैक्नोलॉजी के मामले का एक उदाहरण है। ऐसे मामलों में आम तौर पर मक्खियाँ, भृंग, पतंगे, तिलचट्टे और चींटियाँ शामिल होती हैं (चित्र 1 में ए, डी, एफ)।

### अवेध पशु तस्करी

मान लो कि तुम किसी बड़े हवाई अड्डे पर काम करने वाले पुलिस अधिकारी हो। तुमने एक यात्री को देखा जो



चित्र 1. अपराधों को सुलझाने में फॉरेंसिक कीट विज्ञानियों की मदद करने वाले कीटों में शामिल हैं: (ए) मक्खियाँ, (बी) भृंग, (सी) चींटियाँ, (डी) पतंगे, (ई) दीमक, और (एफ) तिलचट्टे।

कीटों से भरा एक डिब्बा अवैध ढंग से ले जा रहा है। तुम्हें शक है कि वह उन्हें बेचना चाहता है। यह मामला पशु तस्करी का है, जो दुनिया भर में अवैध है। अगर वह यात्री कुछ भी बताने को तैयार ना हो तो तुम कैसे पता लगाओगे कि वो कीट कहाँ से लाए गए हैं?

कीट की प्रजाति और उसके प्राकृतवास की पहचान करके कीट विज्ञानी तस्करी किए गए कीटों के बारे में अहम जानकारी जुटाने में मदद कर सकते हैं। वे यह भी बता सकते हैं कि क्या वो कीट असाधारण या दुर्लभ प्रजाति के हैं। अगर ऐसा है तो अपराध और भी गम्भीर माना जाएगा।

### हिंसक मौत

हिंसक मौतों के मामलों में कीटों की भूमिका वह जाना-माना क्षेत्र है जिसका फॉरेंसिक एंटोमोलॉजी में सबसे अधिक अध्ययन किया गया है। ऐसे मामलों में कीट इस तरह के सवालों के जवाब देने में अहम भूमिका निभाते हैं कि “पीड़ित कौन है?” या “मौत को कितना समय हो गया?” या “हत्या कहाँ हुई?”

लेकिन कीटों से यह सारी जानकारी कैसे हासिल की जाती है?

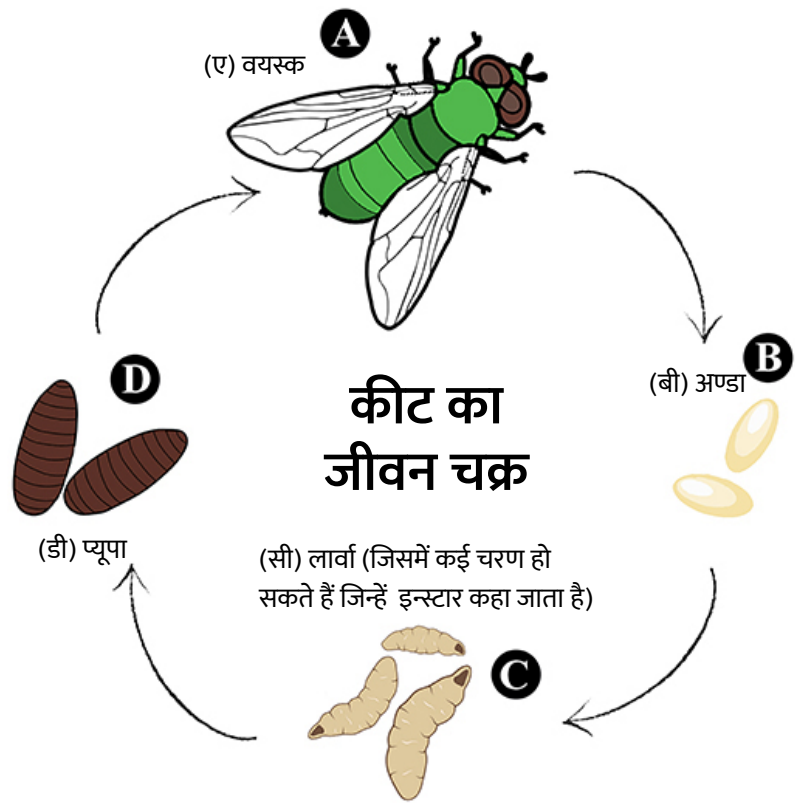
मान लो कि तुम एक जासूस हो जिसे अपराध को सुलझाने के लिए बुलाया गया है। जब तुम अपराध स्थल पर पहुँचते हो तो पीड़ित को ज़मीन पर पड़ा हुआ देखते हो। करीब से देखने पर तुम्हें उसके शरीर के पास मक्खी के कुछ कीड़े दिखते हैं। कीट विज्ञानी को दिखाने के लिए तुम कुछ कीड़ों को सावधानी से इकट्ठा करते हो। कीट विज्ञानी प्रजाति की पहचान करता है और तुमको मिले लार्वा (इल्लियों) के जीवन चक्र, आकार और वज़न के बारे में जानकारी देता है। जैसे कि मक्खी के प्राकृतवास की जानकारी तुम्हें उस जगह के बारे में बता सकती है जहाँ हत्या हुई थी। इसके अलावा, कीड़ों के आकार और वज़न के बारे में जानकारी से यह भी पता चल सकता है कि अपराध किए जाने और शव मिलने के बीच कितना समय बीता। इस समय को पोस्टमार्टम अन्तराल (postmortem interval - PMI/ पीएमआई) के रूप में जाना जाता है।

मरने के बाद मानव शरीर में सड़ने की लम्बी प्रक्रिया शुरू हो जाती है। इस दौरान त्वचा, हड्डियों, नाखूनों और बालों में मौजूद रासायनिक तत्व, जैसे कार्बन और नाइट्रोजन, पृथ्वी में पुनः अवशोषित हो जाते हैं। सड़ने की यह प्रक्रिया नेक्रोफेगस कीटों की विभिन्न प्रजातियों को आकर्षित करती है। नेक्रोफेगस वे कीट होते हैं जो सड़ते हुए जानवरों के पदार्थों को खाते हैं। ये

कीट इन रासायनिक तत्वों द्वारा कई किलोमीटर दूर से भी आकर्षित होते हैं! ये कीट सड़ते हुए पदार्थ को खाकर वहीं अपने अण्डे या लार्वा देते हैं।

उदाहरण के लिए, एक मक्खी एक शव को खोजकर उस पर अपने अण्डे देती है। ये अण्डे फिर लार्वा में बदल जाते हैं, जो खाते और बढ़े होते हैं। ये लार्वा (या इन्स्टार) तीन चरणों से गुज़रते हैं। फिर विकास के अगले चरण में प्रवेश करने के लिए ये एक सुरक्षित (और आम तौर पर अँधेरा) स्थान तलाशते हैं, जिसे प्यूपा चरण कहते हैं। यह तितली के ककून चरण जैसा ही है। अन्ततः एक वयस्क मक्खी प्यूपा से निकलती है (चित्र 3)।

प्रत्येक प्रजाति में अण्डे से वयस्क तक की इस पूरी प्रक्रिया में एक विशिष्ट समय लगता है। यह प्रक्रिया तापमान और आर्द्रता जैसे पर्यावरणीय कारकों से प्रभावित हो सकती है। इसलिए किसी शव पर पाए जाने वाले लार्वा के प्रकार की पहचान करके और उसके आकार, वज़न और संरचनात्मक विशेषताओं का अध्ययन करके, कीट विज्ञानी लार्वा की उम्र का अनुमान लगा सकते हैं। इस तरह पीएमआई जैसी महत्वपूर्ण जानकारी मिलती



चित्र 2. कुछ कीट अपने जीवन चक्र में शरीर का रूप बदलते हैं। अधिकांश कीटों में चार चरण होते हैं: (ए) वयस्क, (बी) अण्डा, (सी) लार्वा (जिसमें कई चरण हो सकते हैं जिन्हें इन्स्टार कहा जाता है), और (डी) प्यूपा। प्यूपा फिर वयस्क हो जाता है और चक्र दोबारा शुरू हो जाता है।

है। इस जानकारी को अदालत में सबूत के रूप में पेश किया जा सकता है ताकि सन्दिग्ध को दोषी ठहराने या बरी करने में मदद मिले।

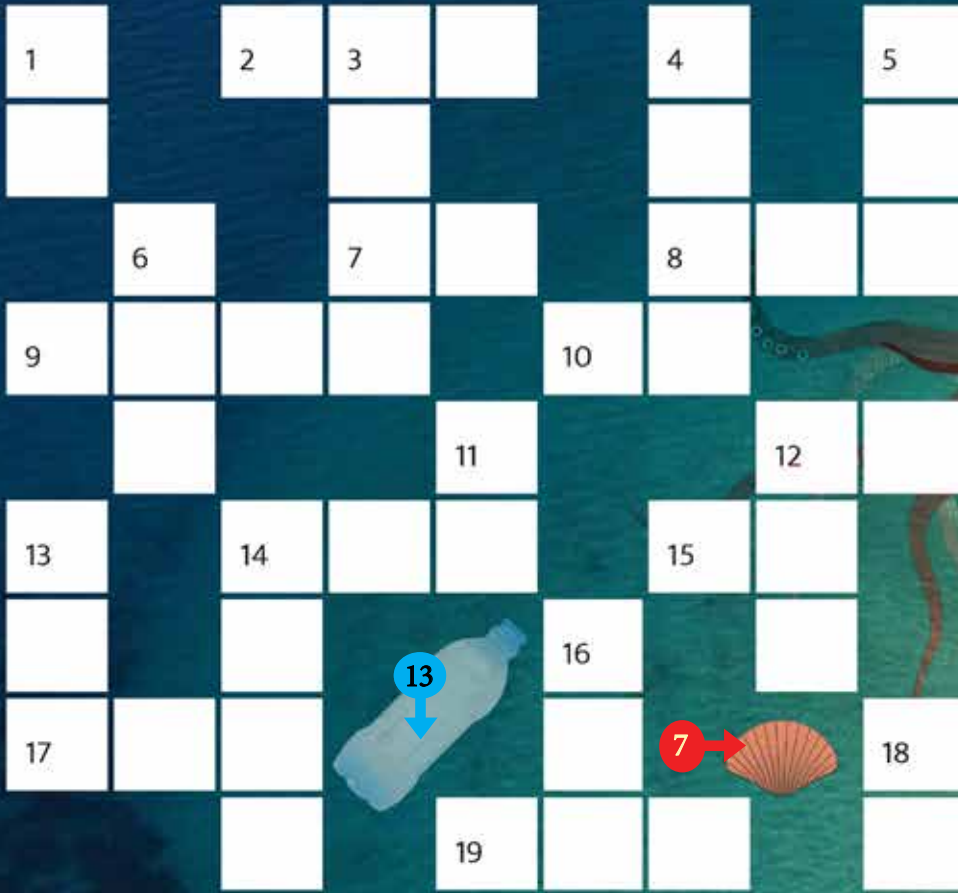
### फॉरेंसिक की रेशनी में कीटों को देखना

कीटों के आवास को नष्ट करने, कीटनाशकों का उपयोग करने, जलवायु परिवर्तन और अन्य कारकों की वजह से कीटों की आबादी घट रही है। यह पारिस्थितिकी तंत्र की स्थिरता और जैव विविधता के लिए बड़ा खतरा है। इसलिए हमें कीटों की विविधता और इन अद्भुत जीवों द्वारा किए जाने वाले आवश्यक पारिस्थितिक कार्यों, जिनमें अपराध स्थल की जाँच भी शामिल है, को संरक्षित करने के लिए कड़ी मेहनत करने की आवश्यकता है। तो अगली बार जब तुम प्रकृति में कोई कीट देखो तो उनकी इस शानदार भूमिका को याद रखना!

युवा सम्पादक: ऐरिक (11 वर्ष) और जसराह (11 वर्ष)

यह लेख 8 नवम्बर 2024 को <https://kids.frontiersin.org/articles/10.3389/frym.2024.1431909> पर प्रकाशित हुआ था।

फ्रॉन्टियर्स फॉर यंग माइंड्स एक ऐसी ऑनलाइन पत्रिका है जहाँ वैज्ञानिकों के शोधपत्रों पर आधारित लेख बच्चे सम्पादित करते हैं।



# चित्रपहेली

बाएँ से दाएँ →

ऊपर से नीचे ↓



15 →

## सुडोकू 84

9	4	8						3
2	7		8		3			1
	1	5	2	6		9		
1	8					6		7
	2	9	6		7	3	8	5
	5		9	3				
		1	3	8		7		
		2	4		1	8		9
				2	9			6

दिए हुए बॉक्स में 1 से 9 तक के अंक भरने हैं। आसान लग रहा है ना? पर ये अंक ऐसे ही नहीं भरने हैं। अंक भरते समय तुम्हें यह ध्यान रखना है कि 1 से 9 तक के अंक एक ही पंक्ति और स्तम्भ में दोहराए ना जाएँ। साथ ही साथ, गुलाबी लाइन से बने बॉक्स में तुमको नौ खब्बे दिख रहे होंगे। ध्यान रहे कि हर गुलाबी बॉक्स में भी 1 से 9 तक के अंक दुबारा ना आएँ। कठिन भी नहीं है, करके तो देखो।



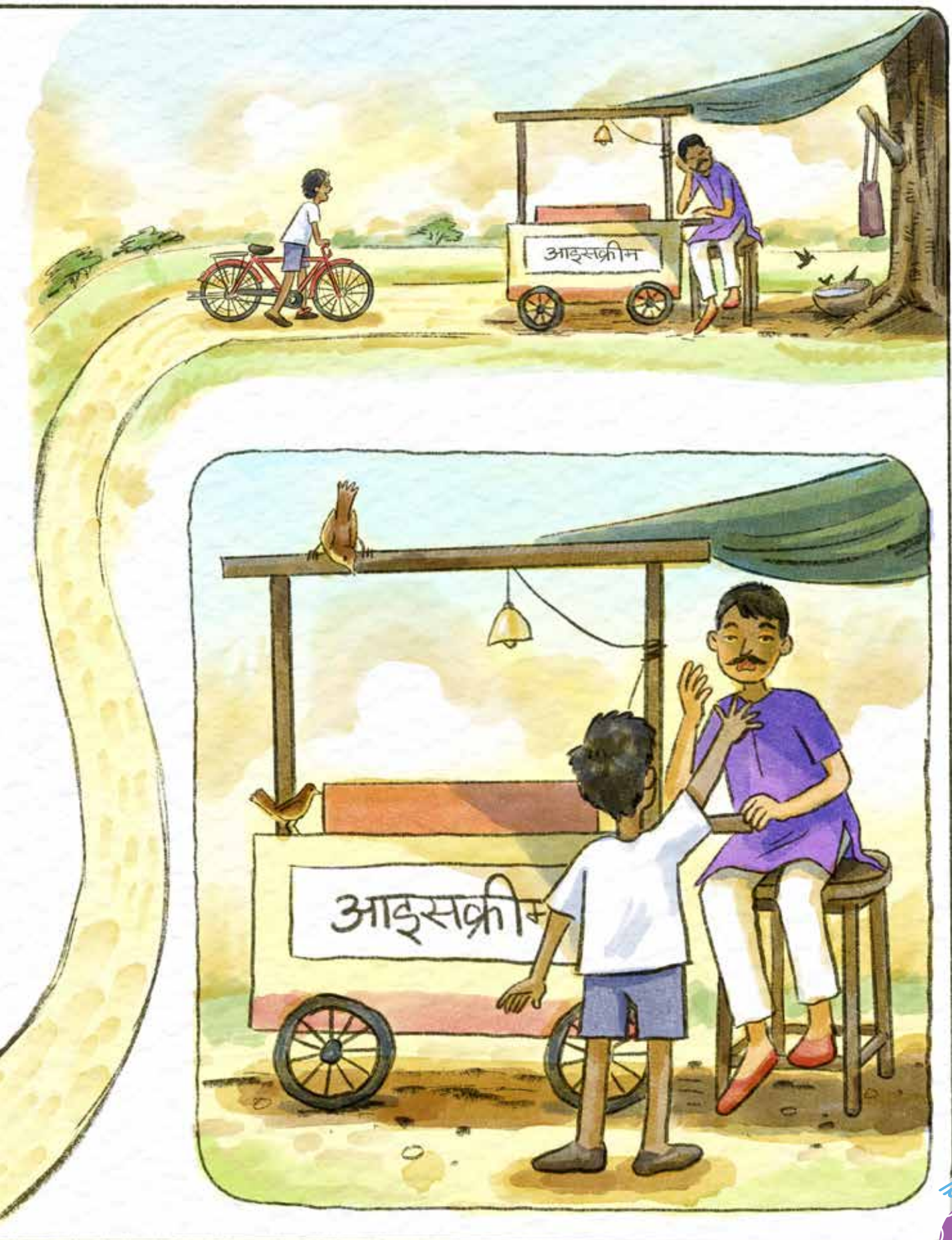
जवाब पेज 42 पर

चक्रमक

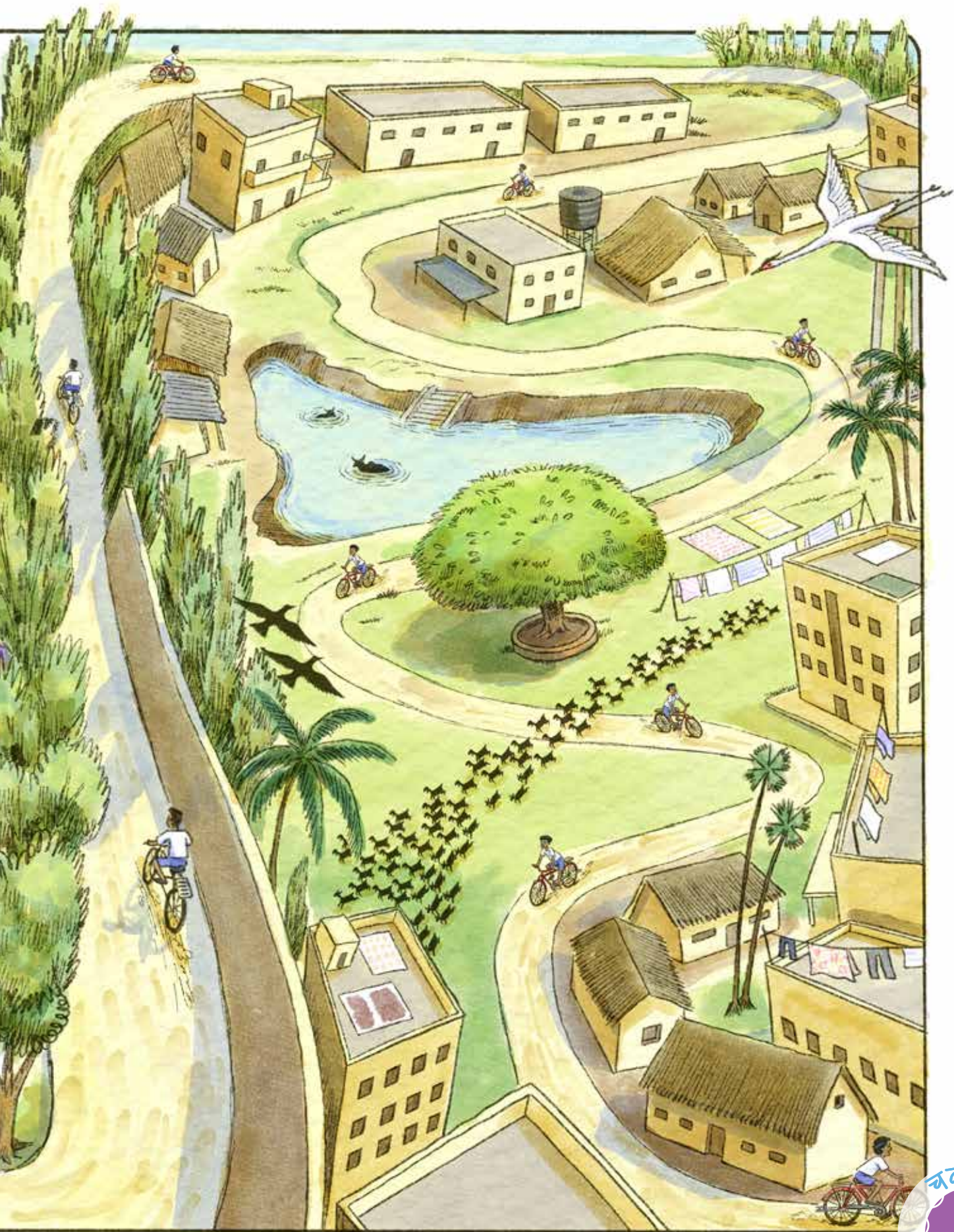
13

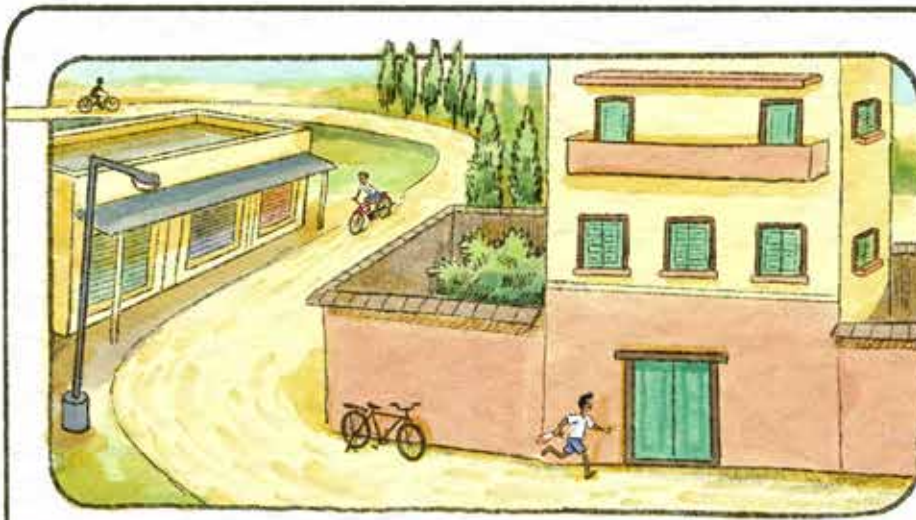
मई 2025













mg'24



चकमक





# बिल्ली के बच्चे

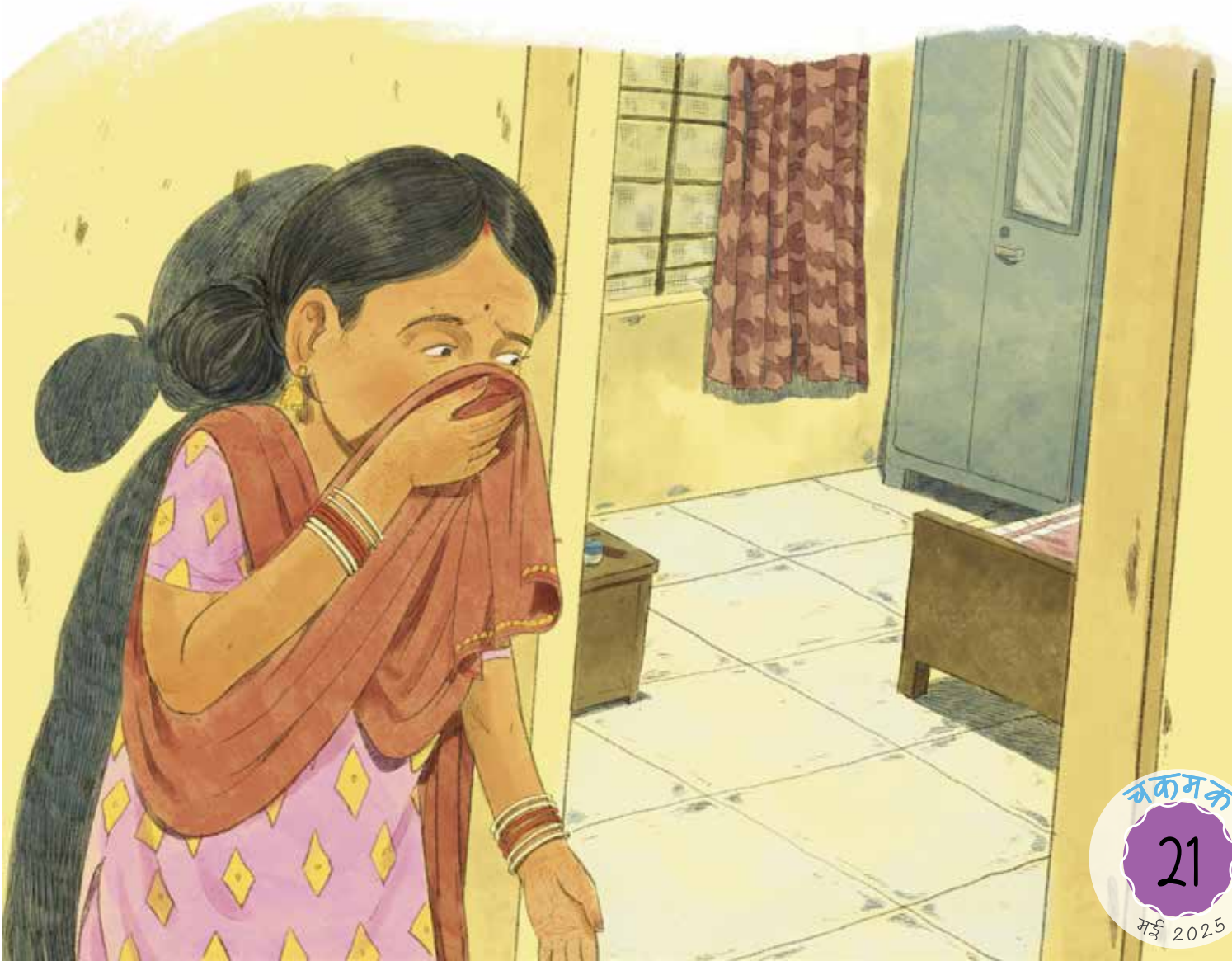
शाहिमा

चित्र: हबीब अली

अक्सर कहा जाता है कि बाल-साहित्य वयस्क ही लिखते हैं या लिख सकते हैं। लेकिन प्रकाशन की दुनिया में हम आजकल नई ऊर्जा और नई हलचल देख सकते हैं। इसकी कुछ झलकियाँ तुम्हें 'नए पते' नाम के इस नए कॉलम में देखने को मिलेंगी। इस कॉलम में अंकुर संस्था से जुड़े स्कूली बच्चे-बच्चियाँ ही लिखा करेंगे। कह सकते हैं कि यह लिखावट एक अनगढ़ प्रयास है। लेकिन इसकी शैली, विषयवस्तु और नज़रिए में तुम्हें शायद एक ताज़गी मिलेगी। उम्मीद है कि यह कॉलम तुम्हें चकित करेगा और कभी-कभार विचलित भी।

पहले लाली अपनी ज़िन्दगी मज़े से जी रही थी। तब उसे कहीं भी सोने के लिए जगह मिल जाती थी। अगर पार्क में किसी ने गद्दा या बोरा रखा हो तो वह उसी पर सो जाती थी। लेकिन अगर किसी गली में कुत्ते का गद्दा रखा हो तो वह उस पर नहीं सोती थी। उसे पता था कि कुत्ता उसे भगा देगा। वह यहाँ की नहीं थी। दूर शहर से आई थी। अब लाली बच्चे देने वाली थी। इसलिए सभी लोगों ने अपनी खिड़कियाँ बन्द कर ली थीं। खुशबू के घरवालों ने भी। मगर पता नहीं वह कहाँ से अन्दर आ गई।

तब खुशबू के भैया की नई-नई शादी हुई थी। उनके कमरे में सामने की ओर एक खिड़की थी। वहाँ से बिल्ली का आना



चकमक

21

मई 2025

मुश्किल था। वह खिड़की काफी ऊँचाई पर थी और फिर लोहे के मज़बूत जाल से ढँकी भी थी। बिल्ली को बहुत ऊँची छल्लाँ लगानी पड़ती। एक जगह सामने की तरफ भी थी। उस ओर ज़मीन कुछ नीची थी। वहाँ से आने के लिए बिल्ली को ज़्यादा मुश्किलों का सामना नहीं करना पड़ता। सीढ़ियों के पास भी एक खिड़की थी। उसमें ना ही कोई जाली लगी थी और ना ही वह किसी पर्दे से ढँकी थी। वह ज़्यादा बड़ी तो नहीं थी। मगर बिल्ली के आने में कोई दिक्कत नहीं थी।

कुछ दिनों से खुशबू की भाभी देख रही थीं कि दिन ब दिन घर गन्दा होता जा रहा है। बदबू तो इस कदर फैली थी जैसे सालों से घर साफ नहीं

हुआ हो। किसी मरे हुए जानवर की सी बदबू आ रही थी। भाभी ने सोचा कि कहीं कोई चूहा तो नहीं मर गया। ऊपर वाले कमरे में जो भी आता सबसे पहले उसके मुँह से निकलता, “उप्फ...! कितनी बदबू आ रही है यहाँ!” उनका बेड पत्थर का था। सामान रखने के लिए भी वहाँ थोड़ी-सी ही जगह थी। उन्होंने सब जगह की सफाई कर डाली। बस बेड के नीचे की नहीं की। घर में सब इस बात से अनजान थे कि बेड के नीचे भी कुछ है।

फिर भैया को याद आया कि बेड की सफाई करना तो वे भूल ही गए। अपने ढँके हुए बेड को जब उन्होंने खोला तो उसकी बदबू ऐसी थी जैसे कोई अण्डा सड़ रहा हो। जैसे ही वह बदबू उनकी



नाक में घुसी उनकी आँखें मीच-सी गई और साँस लेना मुश्किल हो गया। जब उनसे वह बदबू बर्दाश्त नहीं हुई तो उन्होंने अपना सर जल्दी से ऊपर किया। भाभी ने कहा, “क्या हुआ? ऐसे क्यों उठ गए?”

वे बोले, “यहाँ से बहुत बदबू आ रही है और अन्दर पूरा अँधेरा हो रखा है।” फिर भैया ने अपनी नाक पर रुमाल बाँधा और अन्दर जाकर देखा तो चमकीली आँखें नज़र आईं। जब फोन का टॉच जलाकर देखा तो लाली के चार छोटे-छोटे बच्चे दिखाई दिए। उसने बेड के नीचे ही बच्चे दिए थे। पहले तो उन्होंने सोचा कि इन्हें बाहर छोड़ आते हैं। मगर भाभी ने कहा, “नहीं इतनी सर्दी हो रही है। कहाँ ले जाएंगी वो अपने बच्चे? उनकी तो अभी आँखें भी नहीं खुली हैं।”

जब भैया ने भाभी को दिखाया तो बिल्ली अपना मुँह आगे किए अपनी टाँगों को फैलाए लेटी पड़ी थी। उसके बच्चे उसके पेट के पास ही सो रहे थे। बच्चे बहुत प्यारे लग रहे थे। मगर उनकी ऐसी बदबू भाभी को भी बिलकुल पसन्द नहीं आई। भाभी ने कहा, “जब आँखें खुल जाएँगी तब इन्हें हम बाहर छोड़ आएँगे।”

भाभी का पूरा मन था कि वह उन बच्चों को वहीं रखें। मगर भैया बहुत गुस्सा कर रहे थे। पहले जहाँ सुबह की चाय के लिए एक पैकेट दूध आता था, अब दो पैकेट आने लगा। आधा दूध वह उसे सुबह देते और आधा शाम को। अभी तो लाली ठीक से चल भी नहीं पा रही थी कि अपना खाना ढूँढने जाए। चार दिन बाद लाली ने चलना शुरू किया। वह बार-बार अपने बच्चों को मुँह में दबाकर ले जाती और फिर खुशबू के घर ही छोड़ जाती।

एक दिन भैया ने एक मोटी चादर तह करके लाली की जगह पर रख दी ताकि वह थोड़ी गर्म हो सके। फिर भैया और खुशबू दोनों बच्चों को धूप दिखाने छत पर ले गए। थोड़ी देर में बच्चे छत के

दरवाज़े के पास जाने लगे। खुशबू को लगा कि कहीं वे नीचे ना गिर जाएँ। इसलिए वह बार-बार उन्हें उठाकर वहीं रखे जा रही थी। भैया बोले, “देखो यह तो आर्मी की ट्रेनिंग पूरी कर रहे हैं।” इस बात पर खुशबू और भैया दोनों ज़ोर-ज़ोर से हँसने लगे।

बिल्ली के बार-बार मुँह में लेने से बच्चों की आँखें बहुत सूज गई थीं। मगर कुछ दिनों बाद भी जब उनकी आँखें नहीं खुलीं तो भैया को चिन्ता हुई। अब लाली रात में बर्तन गिराने लगी थी और खाना भी जूठा करने लगी थी। इसलिए भैया ने सोचा कि इसे बाहर छोड़ आते हैं। भैया ने दो-तीन बार उन्हें बाहर छोड़ भी दिया। मगर वह बार-बार वहीं बैठकर नीचे अपने बच्चों को रख देती थी। मगर इधर कुछ दिनों से तो वह गायब थी। उसके बच्चे भी पता नहीं कहाँ चले गए थे। शायद वह अपने बच्चों को दूसरे घर में रखने का सोच चुकी थी।



शाहिमा पिछले छह साल से अंकुर के किताबघर से जुड़ी हैं। वह दक्षिणपुरी की सुभाष बस्ती में रहती हैं और राजकीय उच्चतम माध्यमिक कन्या विद्यालय में पढ़ती हैं। कहानियाँ पढ़ना और लिखना उनकी खासियत है।



चकमक

23

मई 2025

भाग - 11

मेहमान जो  
कभी  
गए ही  
नहीं

अन्य देश से आए और हमारे देश  
में सफलता से बसे हुए आक्रामक  
पौधों की सीरिज की अगली कड़ी...

### नागफनी/प्रिकली पियर

वैज्ञानिक नाम: ओपंशिया ट्यूना  
(*Opuntia tuna*)

मूल: वैस्ट इण्डोनेशिया और मैक्सिको  
कैसे पहुँचा: भारत में इसकी  
मौजूदगी 1750 के दशक में दर्ज की  
गई थी। कहते हैं कि टीपू सुल्तान  
इसका इस्तेमाल अपने इलाके की  
किलाबन्दी के लिए करते थे।

आर एस रेशू राज, ए पी माधवन, टी आर शंकर रमन, दिव्या मुडप्पा,  
अनीता वर्गीस और अंकिता जे हिरेमथ  
रूपान्तरण व अनुवाद: विनता विश्वनाथन

चित्र: रवि जाम्भेकर

**नागफनी** सूखे या रेगिस्तान जैसे परिवेश में उगने वाला एक  
कैक्टस है। यह समुद्र तल से 1500 मीटर की ऊँचाई पर भी मिल  
जाता है। ये पौधा 1.5 मीटर की ऊँचाई तक बढ़ सकता है। आम तौर  
पर इसके तने फीके हरे रंग के और चपटे व रसीले (succulent) होते  
हैं। इसके पत्ते परिवर्तित होकर काँटों का रूप ले लेते हैं।

इस पौधे के फूल पीले और फल नाशपाती सरीखे लाल-बैंगनी या  
फिर गुलाबी-लाल रंग के होते हैं। फूल मई के मध्य से अगस्त के  
मध्य तक खिलते हैं और फल नवम्बर से फरवरी तक।

## असर

जंगलों में नागफनी के अनियंत्रित फैलाव से जंगल के पेड़ों के दुबारा उगने पर बुरा असर पड़ता है। अक्सर यह छाँव वाली जगहों में लैंटाना के साथ पाया जाता है, खासकर उन इलाकों में जहाँ बहुत ज़्यादा पौधे फैल चुके हों।



प्रवेश

स्वाभाविक

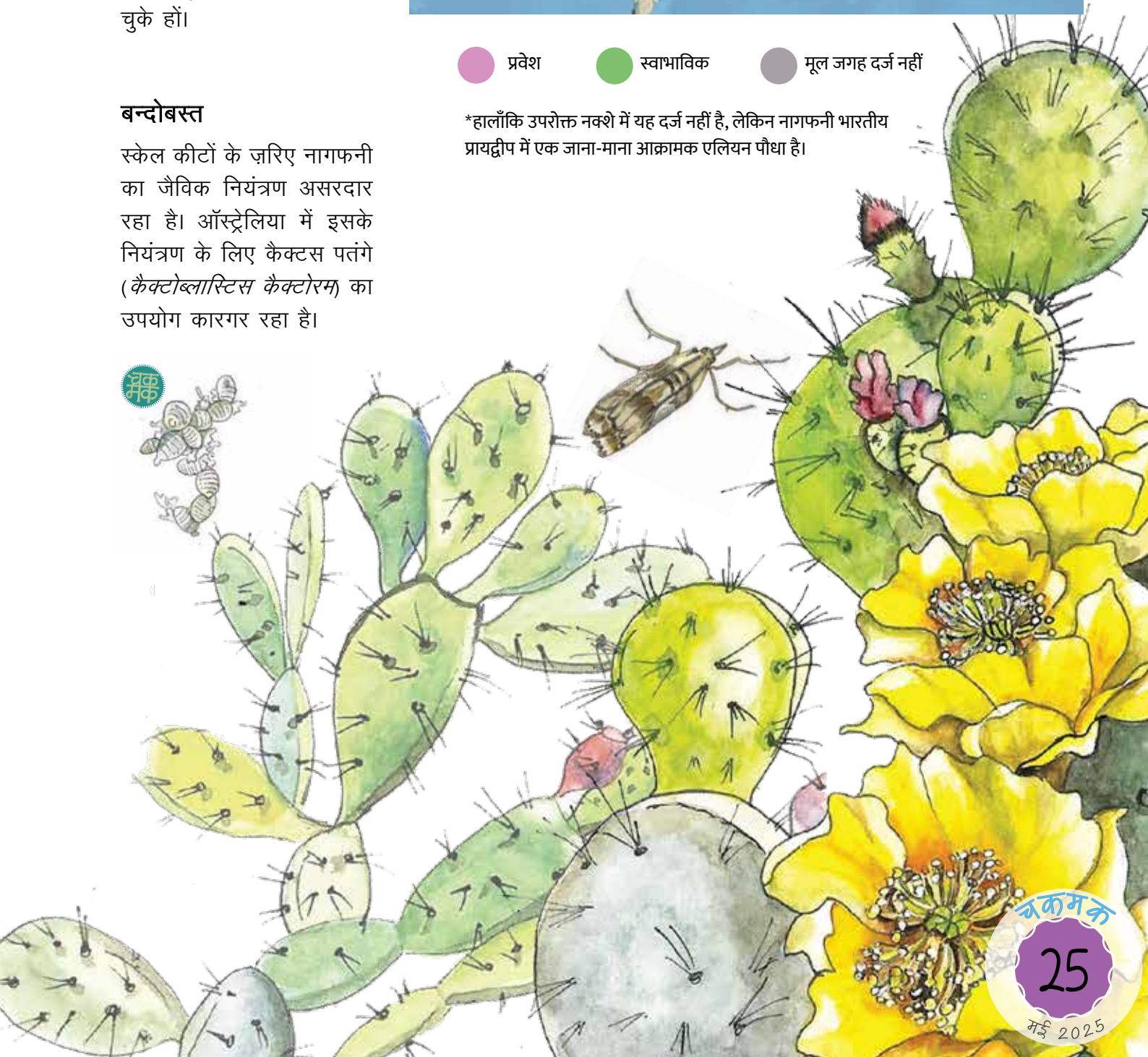
मूल जगह दर्ज नहीं

## बन्दोबस्त

स्केल कीटों के ज़रिए नागफनी का जैविक नियंत्रण असरदार रहा है। ऑस्ट्रेलिया में इसके नियंत्रण के लिए कैक्टस पतंगे (कैक्टोब्लास्टिस कैक्टोरम) का उपयोग कारगर रहा है।

\*हालाँकि उपरोक्त नक्शे में यह दर्ज नहीं है, लेकिन नागफनी भारतीय प्रायद्वीप में एक जाना-माना आक्रामक एलियन पौधा है।

मृक



तब मैं दसवीं में पढ़ती थी।



हम लोग स्कूल ट्रिप पर जाने वाले हैं। अगर तुम किसी खास जगह पर जाना चाहते हो तो बताओ। सबके सुझावों के बाद जगह तय की जाएगी।

## मेरे जीवन का सबसे कठिन समय

तन्वी श्रीकृष्णा काले

चित्र: अनन्या सिंह

हैदराबाद

हमें हैदराबाद जाना चाहिए।

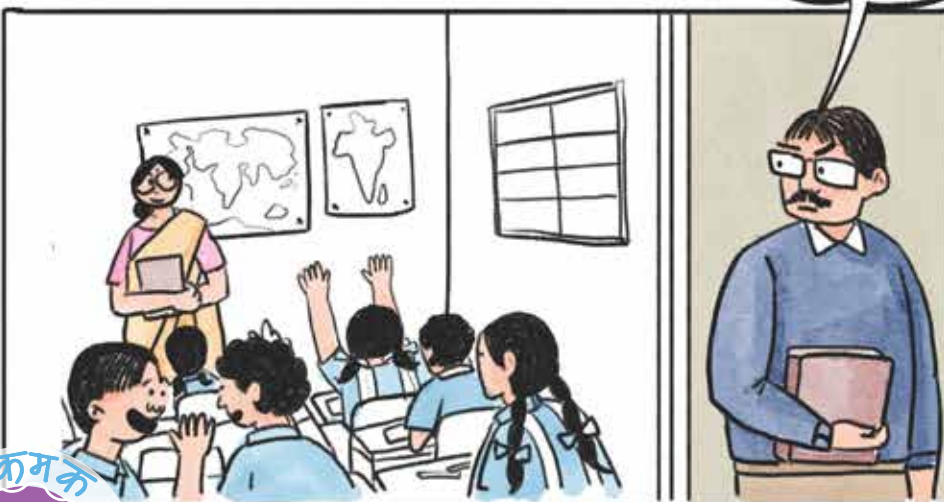
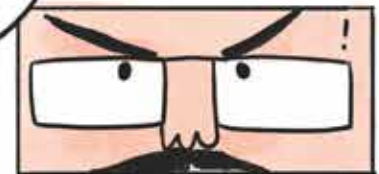
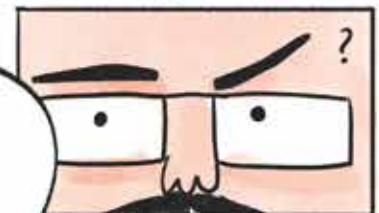


इस ट्रिप की तैयारी के लिए मुझे सहल (पर्यटन) मंत्री चुना गया था।



और फिर हमारी तैयारी शुरू हो गई।

मुझे बिना बताए घूमने जाने का प्लान बना रहे हैं। हम्म!! देख लूँगा।



वे टीचर मुझसे बात नहीं कर रहे थे। मुझे ताने मारे जा रहे थे। लेकिन मैंने उन पर ध्यान नहीं दिया। मेरे बोर्ड एग्जाम पास आ रहे थे।

कुकुमक

26

मई 2025

तन्वी महाराष्ट्र के चन्द्रपुर जिले के भद्रावती के जिला परिषद जूनियर कॉलेज में बारहवीं कक्षा की छात्रा हैं।



इसलिए मेरा पूरा ध्यान पढ़ाई पर था।



तुमने मुझसे पंगा लिया है। मैं तुम्हारे प्रैक्टिकल के मार्क्स काट दूँगा।



अगर मैं दसवीं में फेल हो गई तो?

20 मार्क्स ही तो हैं सर के हाथ में, बाकी 80 मार्क्स तेरे हाथ में हैं। दिखा दे सर को कि तू उनकी मेहरबानी से पास नहीं होने वाली। तुझे थोरी पेपर पर ध्यान देना होगा।



80 मार्क्स थियोरी

20 मार्क्स प्रैक्टिकल

उनकी बातों ने मुझमें जोश भर दिया।

मैंने जी-जान लगाकर पढ़ाई की और अच्छी तरह पेपर हल किया। कोई चीटिंग नहीं की। आखिरकार रिजल्ट का दिन आ ही गया।



मुझे अच्छे नम्बर मिले थे। पर उस विषय में मैं टॉप नहीं कर पाई,



लेकिन वे सर अब भी अपनी अकड़ में थे।

उनको लगा कि उन्होंने मुझे टॉप नहीं करने दिया। पर उन्हें क्या पता कि थोरी की टॉपर तो मैं ही थी। ठान लो तो कुछ भी असम्भव नहीं है।

केवल प्रैक्टिकल मार्क्स की वजह से। मैं, मेरे दोस्त और बाकी टीचर मुझसे खुश थे।



चकमक

27

मई 2025



क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों

दीपक बोहरा, दूसरी, विद्या विकास हाई स्कूल, बेंगलूरु, कर्नाटक

हँसी इसलिए छूटती है क्योंकि पेट में गुदगुदी वाला बटन दब जाता है।

आराध्या कैराती, पाँचवीं, कम्पोजिट स्कूल, धुसाह, बलरामपुर, उत्तर प्रदेश

एक बार मेरी माँ अपने बचपन की कहानियाँ हमें सुना रही थीं। उन्होंने बताया कि जब वो छोटी थीं तो बहुत गोल-मटोल थीं। यह सुनकर हम सब हँसने लगे। पापा ने भी यह बात सुनी तो वे भी हँसे और बोले, “आज भी आप गोल-मटोल ही हैं।” दादी भी वहीं बैठी थीं। दादी ने भी बताया कि बचपन में पापा भी बहुत शरारती थे। दादी जब भोग लगाती थीं तो वे प्रसाद लेकर भाग जाते थे। हम लोग फिर खूब हँसे।

क्यों-क्यों में इस बार का हमारा सवाल था:

हँसी क्यों छूटती है?

कई बच्चों ने हमें दिलचस्प जवाब भेजे हैं। इनमें से कुछ तुम यहाँ पढ़ सकते हो।

अगले अंक का सवाल है:

बढ़ती गर्मी से राहत पाने के लिए तुम क्या तरीके अपनाते हो, और क्यों?

तुम्हारा मन करे तो तुम भी अपने जवाब हमें भेजना। जवाब तुम लिखकर या चित्र/कॉमिक बनाकर दे सकते हो।

अपने जवाब तुम हमें [merapanna.chakmak@eklavya.in](mailto:merapanna.chakmak@eklavya.in) पर ईमेल कर सकते हो या फिर 9753011077 पर वॉट्सऐप भी कर सकते हो। चाहो तो डाक से भी भेज सकते हो। हमारा पता है:

**चकमक**

एकलव्य फाउंडेशन,  
जमनालाल बजाज परिसर,  
जाटखेड़ी, फॉर्चून कस्तूरी के पास,  
भोपाल - 462026, मध्य प्रदेश



चित्र: रोशनी पैकरा, तीसरी, शासकीय कन्या आश्रम शाला, देवगढ़, सरगुजा, छत्तीसगढ़

क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों क्यों

चकमक

28

मई 2025

मानवेन्द्र, चौथी, जिंगल बेल्ल स्कूल, फैजाबाद, उत्तर प्रदेश

हँसी हमारे चेहरे का एक इमोशन होता है। इसमें हमारे मुँह से अजीब तरीके से आवाज़ निकलती है। लोग किसी मज़ेदार चीज़ को देखकर हँसने लगते हैं क्योंकि उनके दिमाग में एक ऐसा पत्र आता है जिससे इन्सान के चेहरे में बदलाव आता है और वे अपने चेहरे का कंट्रोल खो देते हैं। इससे इन्सान अजीब से भाव बनाते हैं।

कभी-कभार जब हम अपने दोस्त का कोई मज़ेदार-सा मूमेंट देखते हैं तब हमें हँसी आती है। कभी-कभार ज़्यादा हँसने से हमारी साँस फूलने लगती है और हिचकी भी आती है। जब हम लोग मन में अतरंगी-सी मज़ेदार बात सोचते हैं तब भी हमें हँसी आती है।

पीहू कुमारी, आठवीं, किलकारी बिहार बाल भवन, पटना, बिहार

जब भी हम खुश होते हैं, तब हमें मज़ा आता है। सबको ये बताने के लिए कि हम बहुत खुश हैं, हमारी हँसी छूट जाती है। और लोग समझ जाते हैं कि यह खुश है और मज़े में है।

पूनम यादव, छठवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,  
जेरवारा, राहतगढ़, सागर, मध्य प्रदेश

अगर कोई हँस देता है तो सबकी हँसी छूटती है। कोई अगर किसी का मज़ाक बना देता है तो हँसी ही हँसी छूटती है। और जब कोई गलत लिख देता है तो भी हँसी छूटती है।

श्रीधी राज, छठवीं, महिन्द्रा वर्ल्ड स्कूल, चंगलपेट, तमिलनाडु

हँसी छूटना एक स्वाभाविक क्रिया है जो किसी के खुश होने, चुटकुले सुनाने या गुदगुदी करने पर आ जाती है। असल में यह हमारे दिमाग की जटिल प्रक्रिया से नियंत्रित होती है। कुछ लोग हर बात में हँसने लगते हैं। पर कुछ को बहुत मुश्किल से हँसी आती है। मुझे तो बहुत हँसी आती है। मेरा भाई हमेशा ही कुछ मज़ेदार हरकतें करता है जिससे मैं हँसते-हँसते लोटपोट हो जाती हूँ।

ज्योति सिंह, आठवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका आवासीय विद्यालय, सरगवां, अम्बिकापुर, छत्तीसगढ़

मोबाइल की रील में लोग इतना फनी-फनी नाटक करते हैं कि उनको देखकर हमें हँसी आ जाती है। कई-कई लोग ऐसी हरकतें करते हैं कि उन्हें देखकर हँसी आ जाती है। उल्टा-सीधा मुँह बनाते हैं। ज़ाहिर-सी बात है हँसी तो आएगी ही। और एक बात, स्नेपचैट में ऐसे-ऐसे फिल्टर आते हैं जैसे कि टकले वाला, बड़ी-सी आँख वाला, बड़े-से चेहरे वाला। ऐसे फिल्टर लगाने पर अपने आपको ही देखकर हँसी आ जाती है। और कोई-कोई तो ऐसी आवाज़ निकालते हैं कि क्या बताऊँ। और यह सब हँसने के लिए ही तो बनाए जाते हैं, रोने के लिए थोड़े ही ना।

चकमक

29

मई 2025



चित्र: मीरा कुजूर, दूसरी, शासकीय कन्या आश्रम शाला, देवगढ़, सरगुजा, छत्तीसगढ़

देव यादव, सातवीं, शासकीय माध्यमिक शाला,  
जेरवारा, राहतगढ, सागर, मध्य प्रदेश

अगर कोई हँसी वाली बात करता है और हमसे कहता है कि तुम हँसना नहीं, चुप रहना। अगर तुम हँसे तो मैं तुम्हें बहुत मारूँगा। तो जब वह बात पूरी हो जाती है तो ज़रूर हमारी हँसी छूट जाती है और हँसी को तो फिर हम काबू नहीं कर पाते हैं।

रंजना मिंज, चौथी, शासकीय माध्यमिक शाला, मानापारा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

हँसी इसलिए छूटती है कि दुनिया में कुछ लोग अच्छा बोलते हैं और सुनने में मज़ेदार होता है। हम सब हँसते हैं जब किसी का कपड़ा फट गया हो, खेलते-खेलते जब गिर जाते हैं तब भी हँसते हैं। अच्छा कहानी-चुटकुला सुनाते हैं तब भी हँसी छूटती है।

शिल्पा यादव, पाँचवीं, प्राथमिक शाला, चलता खास, सरगुजा, छत्तीसगढ़

जब हम हँसी को रोक नहीं पाते तो हमारी हँसी छूट जाती है।



उसे भूत बने बमुश्किल दस मिनट हुए थे। इधर उसकी साइकिल डिवाइडर से टकराई, उधर सट्ट से वो भूत बन गया। भूत बनते ही सबसे पहले वो शरीर और कपड़ों के भार से मुक्त हुआ।

आह, इतना हल्का! वो देर तक इधर-उधर लहराता रहा। फिर वो उस नीम की छत पर लेट गया जिसके नीचे वो खेलता था। उसने नीचे देखा। वाह! क्या बढ़िया दिख रहा था! जैसे दसवें माले की बिल्डिंग से दिखता होगा – छोटा-छोटा, दूर-दूर। उसे पेड़ पर फँसी कुछ पतंगें दिखीं। एक गेंद भी। वो पतंग के पास से तेज़ी-से गुज़रा। कुछ हलचल हुई। और पतंग लहराती हुई नीचे जाने लगी। कोई और रोज़ होता तो वो भागकर पतंग लूट लेता। पर आज नहीं। अब से नहीं। अब वो भूत है।

वो अपने स्कूल के मैदान के ऊपर से उड़ा। मैदान खाली था। अभी सुबह हुई ही थी। बच्चे आते होंगे।

उसे अपने दोस्त जानू की याद आई। भूत जानू को दुखी नहीं देख सकता था। जानू को उसके मरने की खबर किसी से मिले इससे पहले वो उस तक पहुँच जाना चाहता था। वो उसको बता देना चाहता था कि वो अब भूत बन गया है। लेकिन चिन्ता की कोई बात नहीं। वो अब भी मिल सकते हैं। बस, पहले की तरह नहीं। पर कोई तरीका ढूँढ ही लेंगे। वो उसके घर की ओर उड़ चला।

भूत बनने का अब तक का सबसे बड़ा फायदा उसे यह ही नज़र आया था। झट यहाँ, झट वहाँ। उसे याद आया कि कितनी जगहें देखनी बाकी रह गई थीं। कच्छ, भूटान, इस्तान्बुल, कश्मीर, दार्जिलिंग... मन ही मन लिस्ट बनाता वो जानू के आँगन तक पहुँच गया। जानू अभी उठा ही था। खुले आँगन में ब्रश कर रहा था। भूत सीधे वॉशबेसिन के शीशे के आगे आ गया। जानू को शीशा धुँधला लगने लगा। उसने हाथ से उसे पोंछा। शीशा अब भी धुँधला था। उसने अपनी आँखें मलीं। आँख का कीचड़ साफ किया। शीशा अब भी धुँधला रहा। भूत को मज़ा आने लगा था।

अचानक आँगन के गेट की साँकल बजी। साँकल लगातार बज रही थी। जानू ने फटाफट कुल्ला किया। और “अरे! क्या आफत है?” कहते हुए कुण्डी खोलने के लिए दौड़ा।

शशि सबलोक

चित्र: तवीशा सिंह

# भूत



चक्रमक

32

मई 2025



“अरे! बाप रे... क्या करने आया था और किसमें लग गया। कैसे रोऊँ जानू को। कैसे अपने भूत बनने की बात बताऊँ!” यह सोचते हुए भूत तेज़ी-से उड़ा। पर तब तक देर हो चुकी थी।

जानू गेट खोल चुका था। उसे दोस्तों से खबर लग चुकी थी। वो रोने लगा। दोस्तों से लिपटकर दहाड़ें मारने लगा। सारे दोस्त दुखी थे। भूत का मन जानू के साथ रोने को किया। उसे चुप कराने का किया। पर तभी बंटी ने जानू को अपनी साइकिल पर बैठाया। बाकी सारों ने भी साइकिलें उठाई और जीतू के घर की ओर चल दिए।

भूत उनके ऊपर-ऊपर था। जीतू के घर का माहौल और गमगीन था। अर्थी सज चुकी थी। मोहल्ले वाले जमा हो गए थे। लोबान, धूप जल रही थी। माँ दहाड़े मारकर रो रही थीं। “जीतू बेटा, लौट आ। लौट आ मेरे बेटे।” जीतू माँ से लिपट गया। छोटी बहन “भैया-भैया!” कर रही थी। पिता कोने में उसकी साइकिल के पास खड़े थे। उस सीट पर हाथ फेर रहे थे जहाँ थोड़ी देर पहले वो बैठा था। वे चुप थे। एकदम सूखी आँखें लिए। भूत का मन किया कि पिता रो दें।

तभी अर्थी उठी। चीखें और तेज़ हो गईं। बंटी जिससे उसकी दो साल से बोलचाल नहीं थी, वो भी बिलख रहा था।

भूत से यह सब देखा नहीं गया। वो सोचने लगा कि अगर भूत के पास दिल रहना ही था, तो भूत बनने का कोई फायदा नहीं।

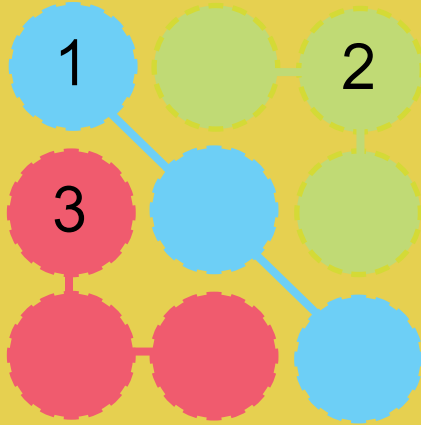


चकमक

33

मई 2025

1. समान रंग के गोलों में 1 से 3 तीन तक की संख्याएँ इस तरह भरो कि किसी भी पंक्ति या कॉलम में कोई भी संख्या दुबारा न आए।



2. एक व्यक्ति को मौत की सजा सुनाई गई। जज ने उससे पूछा कि तुम किस तरह मरना पसन्द करोगे, बताओ। उसने कुछ ऐसा जवाब दिया कि जज ने उसे माफ कर दिया। उसने क्या जवाब दिया होगा?

3. अर्शबीर के पास 10 काले, 8 सफेद और 6 नीले रंग के मोजे हैं। कमरे में एकदम अँधेरा है और अर्शबीर को देर भी हो रही है। ऐसे में बिना देखे मोजों की कम से कम एक जोड़ी पाने के लिए उसे कितने मोजे उठाने चाहिए?

4. इनमें से कौन-सा चित्र अलग है, और क्यों?



5. नीचे कुछ क्लू दिए गए हैं। इनके आधार पर ताले का कोड पता करो।  
865 : एक अंक सही है और सही स्थान पर है।  
964 : एक अंक सही है, मगर गलत स्थान पर है।  
981 : कोई भी अंक सही नहीं है।  
548 : दो अंक सही हैं, मगर गलत स्थानों पर हैं।  
812 : एक अंक सही है, मगर गलत स्थान पर है।

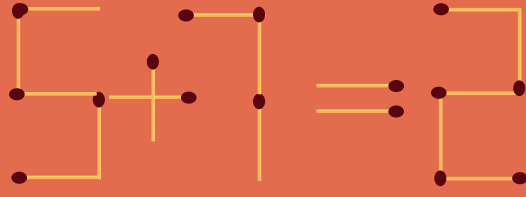
6. 3 बन्दरों के पास कुछ केले हैं। पहले बन्दर ने 3 केले ले लिए। दूसरे बन्दर ने बचे हुए केलों के आधे केले ले लिए। बचा हुआ एक केला तीसरे बन्दर ने ले लिया। बताओ कि शुरुआत में उनके पास कितने केले थे?

7.

दी गई ग्रिड में कई सारे शहरों के नाम छिपे हुए हैं। तुमने कितने ढूँढे?

ग	या	सू	अ	शि	हु	ब	ली	म
इं	दौ	र	मृ	लां	पी	क्स	रे	ना
फा	आ	त	त	ग	प	र	ना	ली
ल	स	झाँ	भो	अ	ज	मे	र	ठ
हि	न	सी	सु	पा	ब	दे	ले	ह
सा	सो	फा	मी	गु	ल	म	र्ग	ख
र	ल	गो	री	वा	पु	री	थु	जु
ल	ख	न	ऊ	हा	र	णे	नी	रा
क	छ	जि	पा	टी	ना	लं	दा	हो

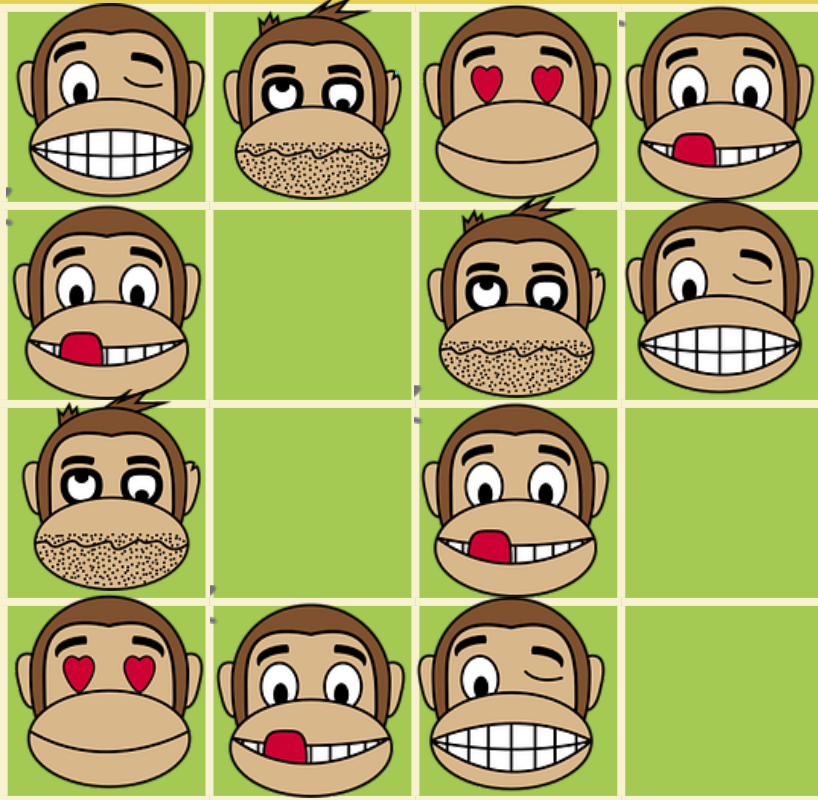
8. केवल एक तीली को इधर-उधर करके इस समीकरण को सही करना है, कैसे करोगे?



9. इन सारी संख्याओं के बीच तुम्हें 1 को ढूँढना है।



10. दी गई ग्रिड की हर पंक्ति व हर कॉलम में अलग-अलग बन्दर आना चाहिए। इस शर्त के आधार पर खाली जगहों में कौन-से बन्दर आएँगे?



## भाषा पच्ची

फटाफट बताओ

मेरे बिना हो चक्का जाम  
पानी जैसी चीज़ हूँ मैं,  
जल्दी बताओ मेरा नाम  
(लड़क)

वह क्या है जो कभी  
किसी के लिए नहीं  
रुकता?

(प्रमद)

सब मुझे कपड़े देकर जाते हैं,  
पर मैं उन्हें पहन नहीं सकता।  
बताओ मैं कौन हूँ?

(किंड)

यह तीनों पहलियाँ मध्य प्रदेश के भोपाल  
ज़िले के अंकुर स्कूल की दसवीं कक्षा  
के छात्र अनिकेत सेन ने भेजी हैं।

सीधा-सादा रास्ता  
बीच में गड़ढा  
चार शिकारी, एक कबूतर

(आर्य प्रदीप सिंह)

एक प्लेट में 12  
रसगुल्ले, 3 चम्मच

(झिग)

यह दोनों पहलियाँ दिल्ली की निरन्तर  
संस्था से अलफिया ने भेजी हैं।

# बहन का जन्म

अंजीत रोकाया

तीसरी

विद्या विकास हाई स्कूल

बैंगलूरु, कर्नाटका

मेरी बहन का नाम अनुष्का है। मैं पाँच साल का था जब वह पैदा हुई। उसका जन्म घर पर ही हुआ। मेरी मामी ने उसकी डिलीवरी की। मम्मी बहुत रो रही थीं। मुझे उन्हें रोते देख रोना आ रहा था। लेकिन मैं बहादुर बना रहा। बाहर आने पर मामी ने अनुष्का को गोद में लिया। अनुष्का छोटी और गोरी दिख रही थी। उसके पेट में एक लम्बी पाइप लगी थी। उसे मामी ने ब्लेड से काट दिया। यह देख मेरी रोकी हुई रुलाई छूट गई। मुझे लगा अनुष्का को कुछ हो जाएगा। मुझे मामी पर बहुत गुस्सा आया। मेरे आँसू रुक ही नहीं रहे थे। मम्मी ने मुझे चुप होने का इशारा किया। पापा ने भी कहा कि बहन को कुछ नहीं होगा। मैंने अपनी शर्ट से आँसू पोंछे।

अनुष्का को सच में कुछ नहीं हुआ। अब वह दो साल की हो गई है।



चित्र: अरविश, दूसरी, अजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

चकमक

36

मई 2025

# दोस्त

भूपेन्द्र कौर

आठवीं, नानकमता पब्लिक स्कूल

नानकमता, ऊधमसिंह नगर, उत्तराखण्ड

मेरा  
पन्ना

सबके लिए क्लास का मतलब अलग-अलग होता है। किसी के लिए क्लास का मतलब दोस्त होता होगा या किसी के लिए पढ़ाई। आज मैं आपको बताती हूँ कि मेरे लिए क्लास का मतलब क्या है। मैं जब इस स्कूल में आई थी तो मैंने सोचा था कि मैं दोस्त बनाऊँगी। लॉकडाउन तक तो सब सही था। लेकिन लॉकडाउन के बाद एक लम्बी-सी लड़की ने सबके सामने मेरी बुराई करके मेरे जितने भी दोस्त बने थे, उन सबको मुझसे दूर कर दिया।

जब सर पढ़ाते हैं, तो वह लम्बी-सी लड़की मेरे दोस्तों के साथ बैठकर हँस रही होती है। उनके साथ बातें कर रही होती है। पूरी क्लास में सब दोस्तों के साथ बैठे होते हैं। पर मैं अकेली बैंच पर बैठी पूरी क्लास को देखती रहती हूँ। मेरे दोस्त मुझसे लंच टाइम में ही बोलते हैं। वह लम्बी-सी लड़की टॉफी, चॉकलेट चुपके-चुपके मेरे दोस्तों के साथ खाती है। और अगर मैं देख लूँ तो मुँह पीछे कर लेती है। वह हमेशा मेरे मार्क्स पूछती है। अगर मेरे मार्क्स ज़्यादा आएँ तो



चित्र: निशा पैकरा, छठवीं, शासकीय पूर्व माध्यमिक शाला,  
परसा, सरगुजा, छत्तीसगढ़

चुप हो जाती है। और अगर मेरे मार्क्स कम आएँ तो खुद को टॉपर समझती है।

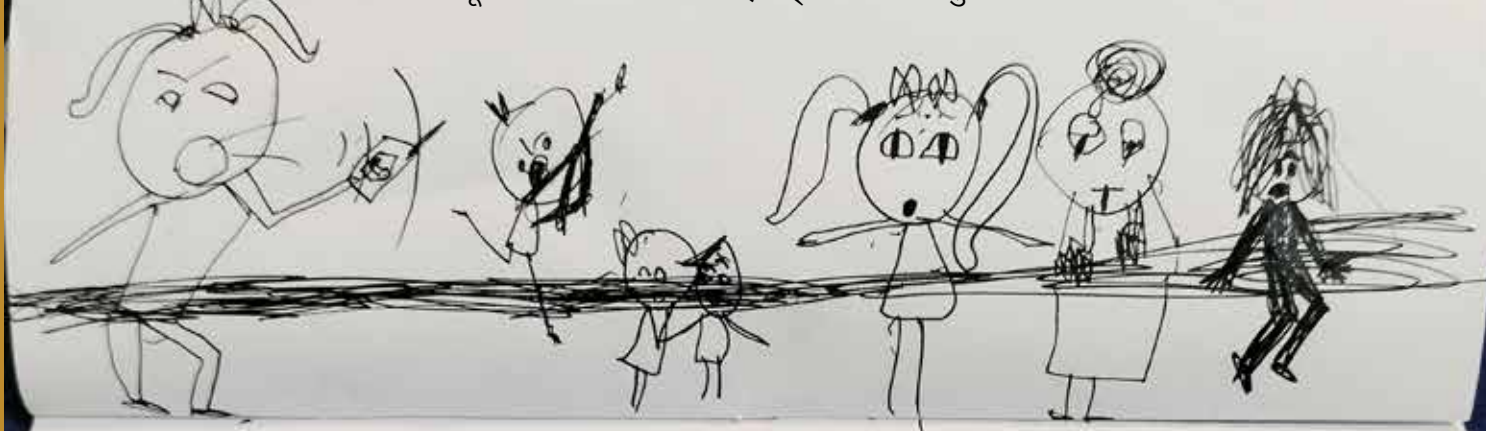
सबके लिए क्लास एक दोस्तों से भरी खुशनुमा जगह होती है। पर मेरे लिए क्लास एक खाली कमरा है जहाँ मैं अकेली बैठी हूँ और टीचर पढ़ा रहे हैं। वह लड़की हमेशा मुझे नीचा दिखाती है। मेरे को लगता है कि क्लास में जो सबसे मासूम लगता है, वही शैतान होता है। मैं क्लास में किसी से कुछ भी माँगू, अगर वह चीज़ सामने भी पड़ी होगी तो फिर भी वह नहीं देते हैं। मैं उस लड़की का नाम तो नहीं लूँगी। पर मेरी दिल की एक बात ज़रूर निकली है। उम्मीद है कि अगले साल वह स्कूल छोड़कर चली जाएगी। और मैं दोस्त बना पाऊँगी!

नानकमता

37

मई 2025

एक बार एक साँप था। वह जंगल में रहता था। एक दिन उसे भूख लग गई। आसपास व जंगल में कहीं भी खाना न मिलने पर उसने सोचा कि पास वाले जंगल में जाएँ और खाना ढूँढकर लाएँ। फिर वह गाँव में चला गया। उसने एक लड़की को देखा। उसने सोचा कि लड़की को डस लें। जैसे ही साँप ने लड़की को डसने के लिए उसका पीछा किया, लड़की ने उसे देख लिया। वह चिल्लाने लगी, “देखो, साँप-साँप!” फिर साँप ने सोचा, “मैं यहाँ से चला जाता हूँ। नहीं तो गाँववाले इकट्ठा होकर मुझे मार देंगे।”



## साँप की भूख

वनेश

ग्यारह वर्ष

शनसाइन प्रोजेक्ट दीपालया  
हिसार सेंटर, हरियाणा

चित्र: नोआ, आठ वर्ष, आगरा, उत्तर प्रदेश

कुकुमक

38

मई 2025



चित्र: अंजली सिंह, सातवीं, कस्तूरबा गांधी बालिका विद्यालय, सीतापुर, सरगुजा, छत्तीसगढ़

## सुनो गप्प!

उवैश  
तितली समूह  
दिगन्तर विद्यालय  
भावगढ़, जयपुर  
राजस्थान

एक दिन मैं मस्जिद में पढ़ते-पढ़ते ही सो गया। जैसे ही हाफिज साहब ने मुझे देखा वह मेरे ऊपर बहुत तेज़ चिल्लाए। उनके चिल्लाने की आवाज़ से मैं मस्जिद के ऊपर छत पर पहुँच गया। मुझे बहुत डर लग रहा था। मैं वापस नीचे नहीं आना चाहता था। मैंने देखा कि मस्जिद के ऊपर से एक हेलीकॉप्टर उड़ रहा था। मैं उसको पकड़कर उसी के साथ लटक गया और थोड़ी देर हवा में घूमने का मज़ा लेता रहा। फिर मैंने सोचा कि जब मैं ऊपर उड़ ही रहा हूँ तो क्यों नहीं अपने दादा-दादी से ही मिल आऊँ।

मैं हेलीकॉप्टर से लटके-लटके ही दौसा पहुँच गया। वहाँ हमारे घर की छत पर उतर गया। फिर अपने दादा-दादी से मिल लिया। दादा-दादी ने मुझे बहुत सारी चीज़ें खिलाईं। अब मुझे मम्मी-पापा की याद आने लगी थी। तो मैंने सोचा कि अब वापस घर कैसे जाऊँ?

मैं घर की छत पर पहुँच गया। वहाँ से एक चिड़िया उड़ रही थी। मैंने उससे रिक्वेस्ट की कि वह मुझे भी साथ ले चले। चिड़िया ने मुझे अपने पंखों पर बिठाया और मेरे घर लाकर छोड़ दिया। मैंने चिड़िया को बहुत धन्यवाद दिया। उसने मुझे समय से घर पहुँचा दिया और मुझे अपनी मम्मी की डाँट से बचा लिया।

## मानापारा

रंजना मिंज  
पाँचवीं, प्राथमिक शाला मानापारा  
सरगुजा, छत्तीसगढ़

मैं मानापारा में रहती हूँ। मैं अपने गाँव के स्कूल में ही पढ़ने जाती हूँ। मेरे स्कूल का नाम प्राथमिक शाला मानापारा है। मेरे गाँव में 2 हैंडपम्प हैं। गाँव की सारी औरतें इन्हीं दो हैंडपम्प से पानी भरती हैं। नल भी है। लेकिन नल से पानी नहीं निकलता है। किसी-किसी के घर में बोर है। तो वे बोर से ही पानी भर लेते हैं। गाँव में एक तालाब भी है। उस तालाब में बहुत सारी मछलियाँ हैं। उस तालाब में कमल का फूल भी है। गाँव में मेरे बहुत सारे दोस्त हैं।



चित्र: अरविश, दूसरी, अजीम प्रेमजी स्कूल, टोंक, राजस्थान

## गजराज होटल

साहिल कुमार मिंज  
पाँचवीं  
प्राथमिक विद्यालय मानापारा  
सरगुजा, छत्तीसगढ़

एक बार की बात है। एक जंगल में एक हाथी रहता था। वह जंगल में रहकर बोर हो गया था। उसने एक दिन शहर की ओर जाने की सोची। वह नहा-धोकर, कानों में झुमके पहनकर, पैरों में चप्पल पहनकर और सुन्दर चादर ओढ़कर निकल पड़ा। उसे रास्ते में एक पुल मिला जो बहुत ही कमज़ोर था। वह डरते हुए उस पर चलकर पार हुआ। अन्त में वह शहर पहुँच गया। उसने अपने लिए बाज़ार से गेंद और बहुत सारे खिलौने खरीदे। उसने सुन्दर चूड़ी भी खरीदीं।

घर पहुँचने से पहले उसने कुछ खाना चाहा। उसकी नज़र गजराज होटल पर पड़ी। होटल जाकर हाथी जैसे ही कुर्सी पर बैठा कुर्सी टूट गई। हाथी गिर गया। गिरने से उसका बहुत सारा सामान बिखर गया। चूड़ी भी टूट गई। चप्पल भी टूट गई। हाथी शर्म के मारे दौड़े-दौड़े जंगल की ओर भाग गया।

## राजा और शेर

आयुषी बुन्देला  
पाँचवीं  
शासकीय प्राथमिक  
विद्यालय बेंकपुरा,  
मेहगाँव, धार, मध्य प्रदेश

एक राजा था। वो एक गाँव में रहता था। उसके घर के पास एक कुआँ था। उसके पास शेर भी था। और पास में पहाड़ था। राजा शेर को बहुत प्यार करता था। पर एक दिन शेर कुएँ में गिर गया। फिर शेर ने बहुत ज़ोर-से आवाज़ लगाई। राजा दौड़ते हुए आया। उसने गाँव के सभी लोगों को आवाज़ लगाई। गाँव के सब लोग राजा का कहना मानते थे। इसलिए सब लोग राजा के कुएँ में गिर गए। फिर सब लोगों ने मिलकर राजा के शेर को निकाल दिया। राजा की आँखों में आँसू आ गए। यह देखकर शेर की आँखों में भी आँसू आ गए।

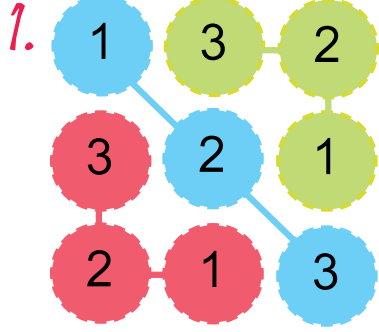


चित्र: दिशा भुइया, कोलकाता बाल भवन, कोलकाता, पश्चिम बंगाल

एक दिन मैं और अनुराग भैया स्कूल जा रहे थे। तो हमें नदी में एक मछली दिखी। वह बहुत बड़ी थी। उसे खून निकल रहा था। शायद उसे चोट लगी थी। वह तैर नहीं पा रही थी। मैंने और अनुराग ने खाखरे के पत्ते से खून साफ किया। फिर हमने उसका नाम गुलाबो रखा। गुलाबो को हमने नदी में छोड़ दिया। कुछ दिनों बाद मुझे फिर से गुलाबो दिखी। अब वह खूब अच्छे-से तैर रही थी।

## गुलाबो मछली

सरस सिटोले  
पाँचवीं, शासकीय प्राथमिक विद्यालय  
गुलावड़, झिरन्या, खरगोन, मध्य प्रदेश



5.

क्लू 3 के हिसाब से अंक 8, 9 व 1 सही नहीं है। इसलिए पहले क्लू में 6 या 5 ही सही अंक हो सकते हैं। पहले व दूसरे क्लू में अंक 6 समान स्थान पर है। इसलिए 6 सही अंक नहीं हो सकता। तो क्लू 1 व 2 व 4 के हिसाब से 4 व 5 सही अंक हुए। क्लू 5 के अनुसार 2 सही अंक है। इसलिए ताले का कोड 425 होगा।

2.

उसने कहा कि वह बूढ़ा होकर मरना चाहता है।

3.

चूँकि उसके पास केवल 3 रंग के ही मोजे हैं, इसलिए 4 मोजे उठाने पर हर हाल में दो मोजे एक ही रंग के होंगे।

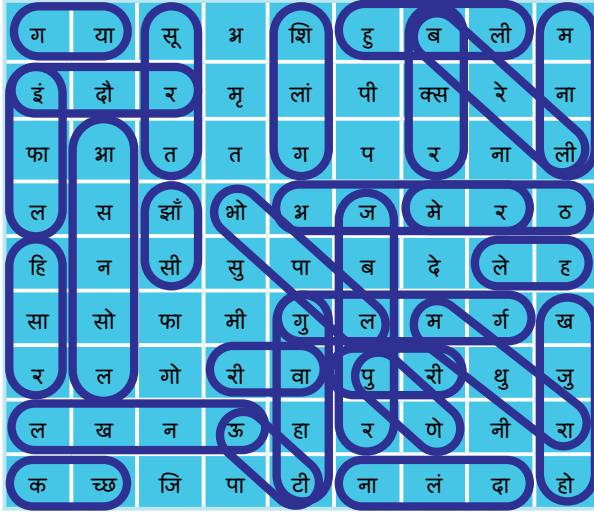
4.

2 नम्बर वाला चित्र बाएँ हाथ का है, बाकी सारे दाएँ हाथ के हैं।

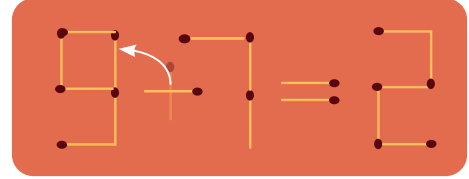
6.

मान लो कि शुरू में बन्दरों के पास  $x$  केले थे।  
पहले बन्दर ने 3 केले ले लिए, तो केले बचे  $x - 3$   
दूसरे बन्दर ने बचे हुए केलों के आधे ले लिए, यानी  $\frac{1}{2}(x - 3)$   
इसके बाद बचे केले  $= (x - 3) - \frac{1}{2}(x - 3) = \frac{1}{2}(x - 3)$   
बचा हुआ 1 केला तीसरे बन्दर ने ले लिया, यानी  $\frac{1}{2}(x - 3) = 1$   
तो  $x - 3 = 2 \Rightarrow x = 5$ । इसलिए शुरुआत में 5 केले थे।

7.



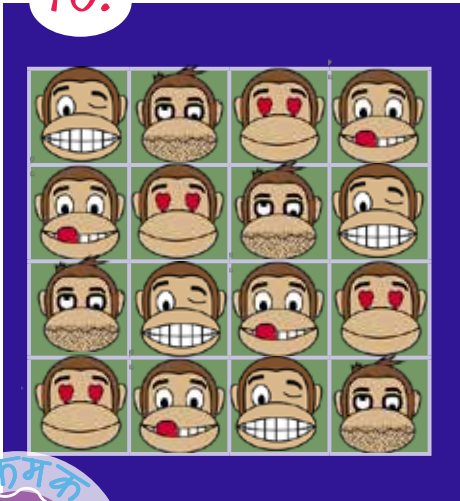
8.



9.



10.



इस अंक की चित्रपहेली का जवाब



सुडोकू-84 का जवाब

9	4	8	1	7	5	2	6	3
2	7	6	8	9	3	4	5	1
3	1	5	2	6	4	9	7	8
1	8	3	5	4	2	6	9	7
4	2	9	6	1	7	3	8	5
6	5	7	9	3	8	1	2	4
5	9	1	3	8	6	7	4	2
7	6	2	4	5	1	8	3	9
8	3	4	7	2	9	5	1	6

# तुम भी जानो

## विश्व संगीत दिवस

21 जून उत्तरी गोलार्ध का सिर्फ सबसे लम्बा दिन ही नहीं है। इस दिन विश्व संगीत दिवस (World Music Day) भी मनाया जाता है। इसे 'फेट द ला म्यूज़िक' के नाम से भी जाना जाता है। इसकी शुरुआत फ्रांस में हुई और फिर सीमाओं को लाँघकर अब दुनिया भर में इसे मनाया जाता है। इस दिन सार्वजनिक स्थानों में संगीत-गोष्ठियाँ होती हैं, जिनमें कोई भी बिना टिकट के संगीत का आनन्द ले सकता है। कुछ लोग इस दिन गाना या कोई साज़ बजाना भी सीखते हैं। किसी एक खास शैली नहीं बल्कि विविध संगीत को सुनने-सुनाने का दिन है ये — चाहे वो फिल्मी गीत हों, लोक संगीत हो, शास्त्रीय संगीत हो या फिर कोई विदेशी शैली। इस दिन को तुम कैसे मनाना चाहोगे?



पेड़ों पर बिजली का गिरना उन्हें खतम कर सकता है — यह बात तो अमूमन सबको पता है। लेकिन हाल ही में एक ऐसी किस्म का पेड़ पता चला है जो बिजली गिरने पर मरता नहीं, बल्कि फलता-फूलता है। डिप्टैरिक्स ओलीफेरा नाम का यह पेड़ अमेज़ॉन के जंगलों में पाया जाता है। यह आसपास के अन्य पेड़ों से लम्बा और चौड़ा होता है। जब बिजली गिरती है तो उसे

यह आकर्षित करता है। हैरानी की बात है कि बिजली गिरने के बाद भी यह खुद तो सुरक्षित रहता है। लेकिन इसके ऊपर उर्गी परजीवी लताएँ और आसपास के पेड़ अक्सर खतम हो जाते हैं। एक बार तो आसपास के 57 पेड़ बिजली गिरने से मर गए। लेकिन यह सलामत रहा। बिजली का गिरना यह पेड़ कैसे सह पाता है इसकी जाँच जारी है।

बिजली से डरता नहीं,  
खिल उठता है यह पेड़

कैक

चकमके

43

मई 2025

# एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों

इब्रे इंशा  
चित्र: हबीब अली

एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों  
एक मेले में पहुँचा हुमकता हुआ

जी मचलता था हर इक शय पे मगर  
जेब खाली थी, कुछ मोल न ले सका

लौट आया, लिप हसरतें सैंकड़ों  
एक छोटा-सा लड़का था मैं जिन दिनों

खैर मेहरुमियों<sup>1</sup> के वोह दिन तो गए  
आज मेला लगा है उसी शान से

जी में आता है इक-इक दुकान मोल लूँ  
जो मैं चाहूँ तो सारा जहाँ मोल लूँ

ना-रसाई<sup>2</sup> का अब जी में धड़का कहाँ  
पर वोह छोटा-सा अल्हड़-सा लड़का कहाँ?

- 
- 1 नाकामियों  
2 ना पा सकना

